



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ अत्यभिष्टा
Dedicated to Truth in Public Interest



अमृतवाणी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल

तिरुवनंतपुरम व शाखा कार्यालय, तृशूर



अमृतवाण १

हिंदी गृह पत्रिका
अक्तूबर 2023 – मार्च 2024
प्रथम अंक

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय, केरल,
तिरुवनंतपुरम व शाखा कार्यालय, तृशूर

प्रकाशन: अमृतवाणी- हिंदी ई-गृह पत्रिका

प्रकाशक: प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय, केरल,
तिरुवनंतपुरम एवं शाखा कार्यालय, तृशूर

अंक: प्रथम अंक

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

संरक्षक
श्री एस सुनिल राज
प्रधान महालेखाकार

मुख्य संपादक
श्रीमती यशोदा
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं एएमजी I)

संपादक मण्डल
संपादक
श्रीमती ए एम भद्राम्बिका, हिंदी अधिकारी

सदस्य

श्री मनोज के के
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती सुशीला पी वी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री योगेन्द्र सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती नीनू एम डी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्रीमती राधिका टी.वी
वरिष्ठ अनुवादक



एस सुनिल राज, भा.लेप.और ले.से.
प्रधान महालेखाकार

भारत आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे है। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना को जगाना है। जिस प्रकार प्रत्येक राष्ट्र की अपनी संस्कृति, सभ्यता, धर्म, आचार-विचार जैसे पैतृक संपत्ति होती है उसी प्रकार राष्ट्रीय विशेषताएं जैसे संविधान, राष्ट्रगान, ध्वज, राजभाषा आदी भी होती है। इस अमृत महोत्सव के अवसर पर हमारे कार्यालय द्वारा राष्ट्र की वाणी के सम्मान में कार्यालयीन गृह पत्रिका, 'अमृतवाणी' की शुरुआत की गई है।

एक सर्वांगीण विकसित कार्यालय के अस्मिता का परिचायक है उसकी गृह पत्रिका। वह एक ऐसा दर्पण है जिसमें उस कार्यालय में कार्यरत पदाधिकारियों की रचनात्मक प्रतिभा प्रतिबिंबित होती है। उस कार्यालय की गतिविधियों को प्रदर्शित करने का एक सार्थक उपाय भी उसके जरिए प्राप्त हो जाता है। बहुत ही कम समय में रचनात्मक एवं साहित्यिक गुणों से संपन्न एक पत्रिका प्रकाशित करना आसान बात नहीं है। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी का मैं हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। प्रतीक्षा है कि 'अमृतवाणी' राजभाषा के प्रगति पथ पर नए-नए कीर्तिस्तंभ स्थापित करती जाएगी।

प्रधान महालेखाकार
संरक्षक 'अमृतवाणी'



यशोदा, भा.लेप.और ले.से.

वरिष्ठ उप महालेखाकार /प्रशासन व लेप.प्र.स.।

प्रिय पाठकों,

आत्मनिर्भर भारत की भावना के तहत भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने का जश्न भारतवासियों द्वारा अमृत काल के रूप में मनाया गया। यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि हमारे कार्यालय की प्रथम ई-हिंदी गृह पत्रिका का नाम अमृतकाल की याद में 'अमृतवाणि' रख दिया है और इसके प्रथम मुख्य संपादक होने का श्रेय मुझे प्राप्त हुआ है। मेरा विश्वास है कि, राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं उसके समुचित विकास को प्रोत्साहित करने की दिशा में इस पत्रिका का प्रकाशन एक सार्थक और सफल कदम है।

हमारा कार्यालय राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति पूरी तरह सचेत और जागरूक रहा है। राजभाषा संबंधी अनुदेशों का अनुपालन तत्परता एवं पूर्ण निष्ठा के साथ करता आया है। विभागीय पत्रिकाओं का प्रकाशन भी राजभाषा प्रचार-प्रसार की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। विभागीय पत्रिकाओं को, राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग ने जो बारह 'प्र' की रणनीति - रूपरेखा की संरचना की है उनमें 10 'प्र' ओं का समूर्त रूप माना जा सकता है और वे हैं प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, प्राइज, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रतिबद्धता और प्रयास। इन घटकों के बिना विभागीय पत्रिकाओं का प्रकाशन संभव नहीं होगा। संपादक मण्डल और हमारे कार्यालय के कर्मचारियों में इन गुणों की कमी नहीं है इसका प्रमाण है कि इतने कम समय में 'अमृतवाणि' का प्रकाशन करने में हम कामयाब हुए हैं। हमने लेखन की विविध विधाओं और विभिन्न कार्यालयीन कार्यक्रमों के सचित्र विवरण से अपनी पहली पेशकश को आकर्षक बनाने का हर संभव प्रयास किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'अमृतवाणि' पाठकगण के मन में अमिट छाप छोड़ने में सफल होगी। मेरी कामना है कि, हमारा यह विनम्र प्रयास अमृत जैसी मीठी वाणि से दिलों को जीत लेगा और प्रगति पथ पर सदा अग्रसर रहेगा। उम्मीद है कि, आगे भी अपनी रचनात्मक कुशलता और प्रतिभा से हमारे कार्यालय के कर्मी पत्रिका परिवार का साथ देंगे और पाठकगण अपने विचार और सुझावों से हमारा मार्गदर्शन करेंगे ताकि हम इस पत्रिका के कलेवर में अधिक निखार ला सकें और इसे अधिक आकर्षक बनाया जा सके।

'अमृतवाणि' के प्रथम अंक के सफल प्रकाशन पर मैं सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल का अभिनंदन करती हूँ और इसकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मंगल कामनाएं देती हूँ।

मुख्य संपादक 'अमृतवाणी'

इस अंक में



लेखापरीक्षा दिवस 2023



हिंदी दिवस तथा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन



हिंदी पखवाडा 2023



गणतंत्र दिवस 2024



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग बैडमिंटन टूर्नामेंट - एक पर्व



लेखापरीक्षा रिपोर्ट



मंदिरों का शहर.....खंडहरों का भी



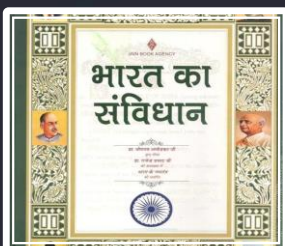
नया साल



एकता में ही बल है



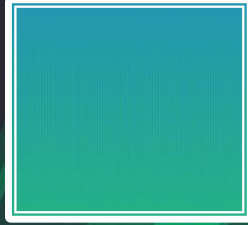
हिंदी मेरा अभिमान



गणतंत्र दिवस



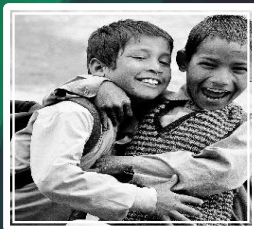
सतरंगी बोली



मैं कल करूंगी



मैं नीलूपमा हूँ



एक दोस्त



ये जरूरी तो नहीं



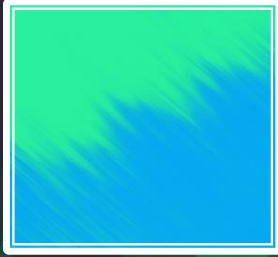
एक दौर बचपन का



बरसात की रातें



सफर



अनुमति-एक महिला के जीवन से अंत तक



वृद्धाश्रम



मातृभूमि



मन के हारे हार है मन के जीते जीत

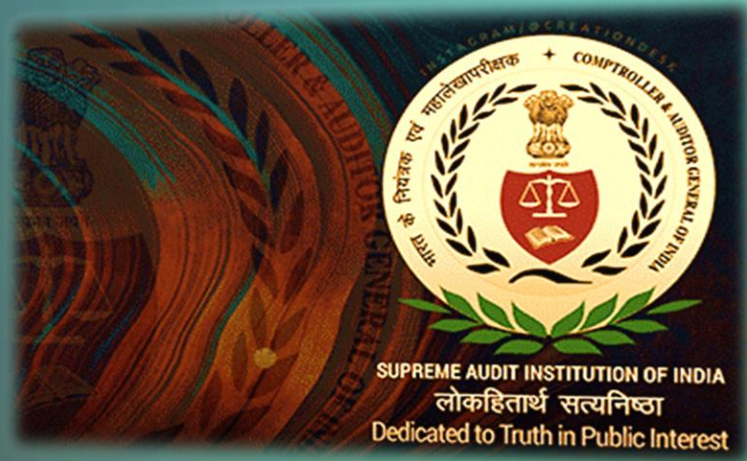


महिलाओं को आर्थिक आजादी की जरूरत

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं।
संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं।

कार्यालयीन

AUDIT BHAVAN



तृतीय लेखापरीक्षा दिवस, 2023

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक संस्था की ऐतिहासिक स्थापना को चिह्नित करने और 160 वर्षों से अधिक समय से पारदर्शिता और सुशासन को बढ़ावा देने में नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के समृद्ध योगदान को उजागर करने के उद्देश्य से हर साल नवंबर 16 को ऑडिट दिवस के रूप में मनाया जाता है। हितधारकों तक और बड़े पैमाने पर समाज तक विभाग की पहुंच बढ़ाने के लिए तथा सार्वजनिक सुशासन के प्रति भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के योगदानों को प्रदर्शित करना इस समारोह का लक्ष्य है।

16 नवंबर, 2021 को ऑडिट दिवस मनाने की प्रथा शुरू की। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 16 नवंबर को भारत के नि.मलेप. के कार्यालय में पहले ऑडिट दिवस के अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित किया। पहले ऑडिट दिवस को चिह्नित करने के लिए माननीय प्रधानमंत्री द्वारा भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक के कार्यालय में सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा का भी अनावरण किया गया। दूसरा ऑडिट दिवस, 16 नवंबर से सप्ताह भर चलने वाला समारोह भारत के उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ के उद्घाटन भाषण के साथ शुरू हुआ था।

तीसरे ऑडिट दिवस समारोह के हिस्से के रूप में नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने 15 से 17 नवंबर 2023 तक तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, भारत की राष्ट्रपति महामहिम सुश्री द्रौपदी मुर्मू ने सार्वजनिक क्षेत्र में अखंडता, शासन और प्रणाली निर्माण को मजबूत करने की दिशा में नि.मलेप. के नेतृत्व में लेखापरीक्षा समुदाय के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने SAI20 में भारत की अध्यक्षता पर प्रकाश डालते हुए वैश्विक सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के योगदान की सराहना की।

मुख्यालय कार्यालय में लेखापरीक्षा दिवस मनाने के तुरंत बाद आनेवाले सप्ताह में भारतीय नियंत्रक-महालेखापरीक्षक संस्था से जुड़े विषयों संबंधी कार्यक्रम आयोजित कर जश्न मनाने के लिए क्षेत्रीय कार्यालयों को दिए गए निदेश के अनुरूप हमारे कार्यालय में भी विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के केरल में स्थित क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा 22 से 24 नवंबर 2023 तक लेखापरीक्षा सप्ताह धूम-धाम से मनाया गया। समारोह में कर्मचारियों और उनके बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं, साइकिल रैली, एक अंतर-कार्यालय डिबेट, पुनर्निर्मित क्रेच का उद्घाटन, 'स्थानीय स्वशासित संस्थानों द्वारा परियोजनाओं के कार्यान्वयन में चुनौतियां' पर पैनल चर्चा और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ एक सार्वजनिक समारोह शामिल था।

दि. 22/11/2023 को कर्मचारियों के लिए निबंध लेखन, रंगोली जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के साथ समारोह प्रारंभ हुआ। कार्यालय के कर्मियों के बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी। मुख्य कार्यालय के साथ कोट्टयम, कोच्ची, तृशूर तथा कोपिक्कोड स्थित चार शाखा कार्यालयों में प्रतियोगिताएं चलायी गयी थीं।

लेखापरीक्षा सप्ताह के उपलक्ष्य में आयोजित साइकिल रैली, समारोह का मुख्य आकर्षण रहा। राजधानी शहर तिरुवनंतपुरम में दि. 23/11/2023 को सुबह 6.30 बजे आयोजित साइकिल रैली क्वडियार पालस के सामने से शुरू हुई थी जिसका फ्लाग ऑफ केरल सरकार के अपर मुख्य सचिव श्री एस जयतिलक, आई ए एस द्वारा किया गया था। श्री एस सुनील राज, आई ए एंड ए एस प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और श्रीमती अतूर्वा सिन्हा, आई ए एंड ए एस, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) तथा तीनों कार्यालयों के समूह अधिकारीगण भी मौजूद रहे।



प्रदर्शित किया। रैली पांच कि.मी की दूरी तय कर तिरुवनंतपुरम के मुख्य कार्यालय में खत्म हुई।

पिछली रात से देर सुबह तक हुई भारी वर्षा की परवाह किए बिना लगभग 150 पदाधिकारियों ने इस रैली में भाग लिया। सफेद टी-शर्ट और सफेद टोपी पहने उत्साही प्रतिभागियों ने सार्वजनिक प्रशासन में जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करने की दिशा में अपनी प्रतिज्ञा प्रदर्शित की। रैली के जोशीले और आनंदमय माहौल ने 'फिट इंडिया मूवमेंट' के प्रति कर्मचारियों की प्रतिबद्धता को भी



दि. 23/11/2023 के दिन अपराह्न को मुख्य कार्यालय में एक इंटर-ऑफिस डिबेट भी चलायी गयी। एक राष्ट्र एक चुनाव, क्या सरकार को गरीबी उन्मूलन या अंतरिक्ष अन्वेषण पर पैसा खर्च करना चाहिए?, सोशल मीडिया वरदान या अभिशाप, मृत्युदंड समाप्त किया जाना चाहिए, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पूर्ण है जैसे सामाजिक महत्व वाले विषयों पर श्री हरिकुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा डिबेट का संचालन किया गया और उसका

पर्यवेक्षण एवं मूल्यांकन कार्य डॉ राहुल एस, उप महालेखाकार / एएमजी-1 तथा श्री बाषा मोहम्मद बी, उप महालेखाकार प्रशासन (लेखा एवं हकदारी) द्वारा किया गया। महानिदेशक (केंद्रीय) कोच्ची शाखा कार्यालय के श्री नवीन ए मेनोन तथा श्री मारम रेड्डी विनय को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। महानिदेशक, लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार) शाखा कार्यालय, तिरुवनंतपुरम के श्री सायूज एन एस तथा श्री मधु ई वी को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

दि.24/11/2023 को समापन समारोह का शुभारंभ लेखा एवं हकदारी कार्यालय के प्रधान महालेखाकार, श्रीमती अतूर्वा सिन्हा, आई ए एंड ए एस, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वारा नवीनीकृत शिशुगृह के उद्घाटन के साथ हुआ। श्री एस सुनील राज, आई ए एंड ए एस प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) भी उस शुभ घड़ी में उनके साथ रहे।



तदुपरांत, सुबह 10.30 बजे 'स्थानीय स्वशासित संस्थाओं द्वारा परियोजनाओं के कार्यान्वयन में चुनौतियों' पर पैनल चर्चा आदरणीय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) श्री एस सुनील राज, आई ए एंड ए एस द्वारा सदस्यों व दर्शकों के स्वागत के साथ आरंभ हुई। प्रधान महालेखाकार महोदय पैनल चर्चा के मॉडरेटर रहे। पैनल चर्चा के लिए आमंत्रित सदस्य थे – सुश्री



पी पी दिव्या, अध्यक्ष, जिला पंचायत, कण्णूर, श्री एस एस विजयानंद, आईएएस (सेवानिवृत्त), सुश्री शर्मिला मेरी जोसफ, आईएएस (प्रधान सचिव, एलएसजी विभाग), प्रो.जिजु पी अलेक्स, केरला स्टेट प्लैनिंग बोर्ड के सदस्य, श्री विजु मोहन, अध्यक्ष, आर्यनाड ग्राम पंचायत, आदि। मॉडरेटर ने प्रत्येक



पैनलिस्ट का उनकी योग्यताओं और उपलब्धियों सहित संक्षिप्त परिचय दिया। श्रोतागण में माननीय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) श्रीमती अतूर्वा सिन्हा, आईए एंड एएस, श्रीमती सबिता बालकृष्णन, निदेशक (एफ एंड सी) लेखापरीक्षा और भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग, तिरुवनंतपुरम के समूह अधिकारीगण और कर्मचारीगण शामिल थे।



बातचीत ने विशिष्ट विषय के दूरगामी प्रभाव का पता लगाने के लिए कई विशेषज्ञों को एक साथ लाया, अपने दृष्टिकोण साझा किए और जीवंत चर्चा में लगे रहे। चर्चा के बाद आदरणीय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) द्वारा उपरोक्त सदस्यों को लेखापरीक्षा दिवस स्मृति चिह्न सौंपे। तदुपरांत, उपरोक्त सभी गणमान्य व्यक्तियों और भागीदार कार्यालयों के कर्मी सदस्यों के लिए मध्याह्न भोजन की व्यवस्था की गयी थी।

दोपहर के बाद
3.30 बजे से सार्वजनिक

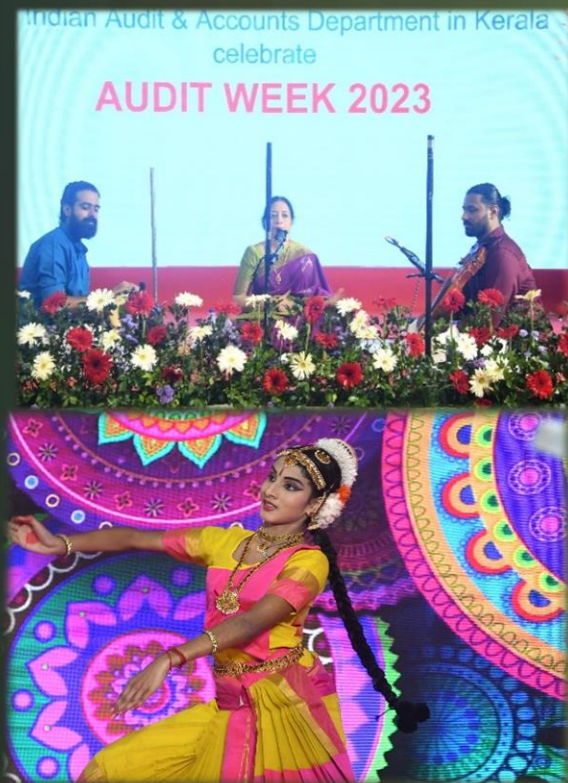


कार्यक्रम का आयोजन हुआ था। श्रीमती यशोदा, वरि.उप महालेखाकार/ प्रशासन एवं लेप.प्र.स-I के स्वागत भाषण के साथ सभा की शुरुआत हुई। कार्यक्रम का उद्घाटन पेरारूर के विधायक और लोक लेखा समिति के अध्यक्ष श्री सण्णी जोसफ द्वारा किया गया। विधायक ने अपने भाषण में नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की



भूमिका एवं लेखापरीक्षा रिपोर्टों के महत्व, प्रासंगिकता को रेखांकित किया। बाद में प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ने भी बैठक को संबोधित किया। विधायक द्वारा सभी प्रतियोगिताओं के सदस्यों को पुरस्कार वितरित किए गए।

बैठक के बाद कर्मचारियों और उनके परिवारिक सदस्यों के विभिन्न संसांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। कार्यक्रम महानिदेशक (केंद्रीय) के कोच्ची शाखा के उप निदेशक, श्री शशिधर की धर्मपत्नी, प्रसिद्ध गायिका श्रीमती प्रतिमा शशिधर द्वारा शास्त्रीय संगीत के साथ शुरू हुआ। उनके द्वारा विभिन्न रागों में प्रस्तुत गीत



ने श्रोतागण को मंत्रमुग्ध कर दिया। उसके बाद वाद्ययंत्रों के ताल-मेल से, श्री केशवन नंपूतिरी, सहायक



लेखापरीक्षा अधिकारी ने बांसुरी पर, श्री सानंद के एस, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने वयलिन पर और श्री श्रीकुमार, वरिष्ठ लेखाकार ने मृदंगम पर अपनी अद्भुत प्रतिभा का प्रदर्शन किया। श्री

साईकुमार, लेखापरीक्षक की सुपुत्री कुमारी निहिता साई कुमार जोकि गिनीज रिकार्ड हॉल्डर है, ने कुच्चिप्पुडी डांस प्रस्तुत किया। इस वर्ष का ऑडिट सप्ताह समारोह श्री एस के अनुरूप के नेतृत्व में महालेखाकार कार्यालय मनोरंजन क्लब टीम द्वारा प्रस्तुत समूह गीत और वरिष्ठ उप महालेखाकार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ संपन्न हुआ।



75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

हिन्दी दिवस

तीसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

वर्ष 2019 में माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी ने हिंदी दिवस के आयोजन को बड़े पैमाने पर दिल्ली के अलावा दूसरे शहरों में भी आयोजित करने की इच्छा जाहिर की थी। इस वजह से पिछले दो सालों से राजभाषा विभाग एवं गृह मंत्रालय इस कार्य को सफलतापूर्वक कर रहा है। पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 13 से 14 नवंबर 2021 को वाराणसी में आयोजित किया गया था, इसके बाद इस क्रम को आगे बढ़ाते हुए विभाग द्वारा हिंदी दिवस 2022 व द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन गुजरात के सूरत शहर में आयोजित किया गया था। इन दोनों आयोजनों में देश के कोने-कोने से 10 हजार से ज्यादा प्रतिभागी शामिल हुए थे। राजभाषा सम्मेलन का तीसरा संस्करण पुणे में आयोजित किया गया था।

केंद्र सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा बालेवाड़ी स्थित शिव छत्रपति स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में आयोजित इस दो दिवसीय सम्मेलन में केंद्र सरकार के विभिन्न उपक्रमों, बैंकों के हिंदी अधिकारी और हिंदी सेवा तथा भारतीय

भाषा के विद्वान शामिल हुए थे जिन्होंने विभिन्न सत्रों में विभिन्न विषयों पर अपने ओजस्वी विचार व्यक्त किए। इस सम्मेलन में विकसित भारत के भाषाई परिदृश्य जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस भी शामिल है तथा भारतीय भाषाओं से सशक्त होती हिंदी जैसे विषयों पर आधारित सत्र शामिल किए गए थे। सम्मेलन के उद्घाटन



सत्र में 'कंठस्थ' और ई-ऑफिस के इंटिग्रेशन का लोकार्पण भी किया गया था। सम्मेलन में राजभाषा के कार्यान्वयन में अहम योगदान देने वालों को 'राजभाषा कीर्ति' और 'राजभाषा गौरव' पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। राजभाषा नीति के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय को गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सर्वोच्च पुरस्कार "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा जी द्वारा भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय के प्रतिनिधि महानिदेशक (राजभाषा) को प्रदान

किया गया। यह पुरस्कार वर्ष 2022- 23 के लिए 300 से अधिक कार्मिक वाले मंत्रालय/विभाग श्रेणी में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रदान किया गया है।

दि.14.09.2023 को सम्मेलन के उद्घाटन सत्र एवं हिंदी दिवस समारोह के दौरान माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा जी ने कहा, आजादी के बाद 2021 से व्यापक स्तर पर हिंदी दिवस मनाया जाने लगा है। समादरणीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की नीतियों के चलते हिंदी का जलवा G-20 सम्मेलन में दिखाई दिया। सारे राष्ट्र प्रमुखों ने हिंदी भाषण को सराहा, कई नेताओं ने हिंदी में प्रधानमंत्री का अभिनंदन भी किया। वहीं आदरणीय केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने अपने वीडियो संदेश में कहा कि, अब हिंदी को पूरे विश्व में सम्मान मिल रहा है, पूरे देश को एक सूत्र में जोड़ने की ताकत हिंदी में है। तृतीय भारतीय राजभाषा सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश, केंद्रीय राज्य मंत्री भारती पवार, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष भर्तृहरि महताब, राज्यसभा सांसद राकेश सिन्हा, वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष प्रो. गिरीशनाथ झा, राजभाषा विभाग की सचिव अंशुली आर्य, संयुक्त सचिव डॉ. मीनाक्षी जौली भी उपस्थित थीं।

'हिंदी के विकास में मीडिया की भूमिका' विषय पर पुणे जैसे मराठी भाषी क्षेत्र से निकलते 'आज का आनंद' नामक हिन्दी अखबार के संस्थापक श्री श्याम अग्रवाल ने अपने पत्रकारिता का अनुभव साझा किया। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार हरीश नवल उपस्थित थे। श्री हरीश नवल ने कहा कि हिंदी के विकास में नाटक, गीत, उपन्यास, टीवी धारावाहिक और रेडियो का भी विशेष महत्व रहा है। टीवी धारावाहिक के कारण ही देश के कोने-कोने में

हिंदी का प्रचलन बढ़ा है। तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के तीसरे सत्र में भारत 24 न्यूज चैनल की पत्रकार रुबिका लियाकत, मध्यप्रदेश के रवि कुमार सिहाग आईएएस, राजस्थान के निशांत जैन आईएएस एवं उत्तर प्रदेश के सत्यार्थ अनिरुद्ध पंकज आईएएस द्वारा 'रोजगार के बढ़ते अवसर: हिन्दी के परिप्रेक्ष्य में' विषय पर अपनी समीक्षा पेश की गई।

15 सितंबर को प्रथम सत्र में 'भारतीय भाषाओं से सशक्त होती हिंदी' विषय पर उत्तरप्रदेश विधान सभा के पूर्वाध्यक्ष श्री हृदयनारायण दीक्षित, केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान के अध्यक्ष श्री चामू कृष्ण शास्त्री, वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण और मराठी भाषाविद् श्री दामोदर खडसे ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए।

दूसरा सत्र 'नराकास: राजभाषा कार्यान्वयन का प्रभावशाली मंच' विषय पर था। उक्त सत्र का अध्यक्ष रहा आदरणीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा और विशिष्टातिथि



रहे केरल के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान। आईओबी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी अजय कुमार श्रीवास्तव, मुंबई के मुख्य आयकर आयुक्त जहांजेब अख्तर, गाजियाबाद के मुख्य आयकर आयुक्त डॉ. शुचिस्मिता पिल्लई, हडको के निदेशक एम. नागराज, इगू के कुलपति प्रो. नागेश्वरराव, पंजाब नेशनल बैंक के मुख्य

महाप्रबंधक समीर वाजपेयी उपस्थित थे। प्रस्तुत विषय पर विविध मान्यवरों ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर केंद्र सरकारी कार्यालयों को प्रभावी राजभाषा कार्यान्वयन हेतु नराकास पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

दूसरे दिन के तीसरे सत्र में महाराष्ट्र हिंदी परिषद की उपाध्यक्षा सुश्री प्रियंका शक्ति ठाकुर ने 'सर्वसुलभ, सर्वसमावेशी एवं सर्व व्यापी भाषा-हिंदी' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारी हिंदी भाषा में तीन गुण हैं। पहला हिंदी भाषा सर्वसुलभ है, हिंदी भाषा सर्वसमावेशी है तथा हिंदी भाषा सर्वव्यापी है। हिंदी जनसामान्य के लिए सर्व सुलभ है। इसलिए महात्मा गांधी गुजराती और लोकमान्य तिलक ने मराठी होते हुए भी आजादी के आंदोलन में जनचेतना के लिए हिंदी भाषा का ही उपयोग किया, क्योंकि वे जानते थे कि हिंदी भाषा सर्वसुलभ है और यह जनसामान्य को ज्यादा प्रभावित करेगी। प्रसिद्ध गीतकार समीर अंजान और प्रसिद्ध फिल्म निर्माता एवं निदेशक श्री चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने भी इस विषय पर अपने विचार साझा किए।

आखिरी सत्र में प्रख्यात अभिनेता आशुतोष राणा का साक्षात्कार वरिष्ठ कवि, गीतकार और टीवी पत्रकार श्री आलोक श्रीवास्तव ने लिया जिसमें श्री आशुतोष राणा ने कहा कि हिंदी की सेवा का उत्सव ही हम इस दिन और इस पखवाड़े में मनाते हैं। हमारे देश में सिर्फ त्यौहारों का ही उत्सव नहीं होता, भावों का भी उत्सव होता है, भाषा का भी उत्सव होता है। भारतीयों का मूल चित्त ही उत्सव का होता है। इसलिए यह उत्सव मनाया जाता है। इसके साथ ही उन्होंने कई रोचक प्रसंग भी सुनाए और कविताएं भी सुनाई।

राजभाषा विभाग द्वारा 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' की नई परंपरा इसलिए शुरू की गयी थी कि भाषाई विविधता और एकता को बढ़ावा दे सके। देश की सभी भाषाओं को सशक्त करने से ही एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव है। पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन भी अपनी उद्देश्य प्राप्ति में सफल सिद्ध हुआ।



हिंदी पखवाड़ा समारोह 2023

मुख्य कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

राजभाषा विभाग के निदेशानुसार पुणे (महाराष्ट्र) में हिंदी दिवस व पखवाड़े के उद्घाटन के पश्चात कार्यालयों में 18 सितंबर से हिंदी पखवाड़ा समारोह 2023 समुचित रूप से आयोजित किया गया।



शाखा कार्यालय सहित प्रधान महालेखाकारों (लेखा एवं हकदारी), (लेखापरीक्षा-I) तथा (लेखापरीक्षा-II) के कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पखवाड़े की शुरुआत प्रधान महालेखाकार के निदेशानुसार दिनांक. 14.09.2023 को सुबह 11.00 बजे सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों द्वारा हिंदी दिवस का पालन सुनिश्चित करने हेतु राजभाषा प्रतिज्ञा से हुई।

दि.18.09.2023 पूर्वाह्न 10.30 बजे प्रतियोगिताओं का

उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। उद्घाटन समारोह का शुभारंभ तीनों कार्यालयों के वरिष्ठ उप महालेखाकार द्वारा दीप प्रज्वलित कर की गई। अपने भाषण में श्रीमती पेबा पी एच, उप महालेखाकार/ ले.प्र.स. III ने कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्यकलापों की सराहना की और अधिक ऊँचाईयाँ छूने का आह्वान किया। श्री पी के लालू, वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशा. (लेखापरीक्षा I) तथा श्री बिजु जोसेफ, उप महालेखाकार (हकदारी) भी बैठक में उपस्थित रहे। प्रतियोगिताओं की शुरुआत निबंध लेखन से हुई। संयुक्त पखवाड़ा आयोजन समिति संयोजक, श्री एन दिनकरन, वरिष्ठ उप महालेखाकार/ ले. व हक उक्त द्वारा प्रतियोगिता के लिए विषयों का चयन किया था। प्रतियोगिता का संचालन, श्रीमती के आर रोहिणी, हिंदी अधिकारी (ले व ह) द्वारा किया गया। साथ में श्रीमती जे.आर. आशा, हिंदी अधिकारी (लेखापरीक्षा-I) और श्रीमती ए एम भद्रांबिका, हिन्दी अधिकारी (लेखापरीक्षा- II)



तथा तीनों कार्यालयों के हिंदी पदाधिकारी भी मौजूद रहीं । 18 सितंबर से लेकर 22 सितंबर तक कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी । प्रतियोगिताओं में निबंध लेखन व टिप्पण लेखन, प्रशासनिक हिंदी, अंग्रेजी से हिंदी में और विलोमतः अनुवाद, कथा/ कविता रचना, कविता पाठ, आशुभाषण, हिंदी गीत एकल – महिला/ पुरुष, समूह गान, प्रश्नोत्तरी और अंताक्षरी प्रतियोगिता शामिल हैं । चूंकि हिंदी पखवाड़े का आयोजन ऑफलाइन माध्यम से काफी समय के बाद हो रहा था, सभी प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़ा चढ़कर हिस्सा लिया ।

दि.26.09.2023 को पूर्वाह्न 10.30 बजे से 12.30 बजे तक तीनों कार्यालय के अधिकारियों के



लिए राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें श्रीमती रंजिनी के आर, सदस्य सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.1)व सहायक निदेशक(रा.भा.),मुख्य पोस्टमास्टर जनरल के कार्यालय द्वारा

व्याख्यान प्रस्तुत किया गया ।

29 सितंबर को सुबह 11.30 बजे हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया । श्री पी के लालू, वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशा. (लेखापरीक्षा I) ने सभा का स्वागत किया । सभा में डॉ बिजु जेकब, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) अध्यक्ष रहे । प्रधान महालेखाकार द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ समारोह का शुभारंभ हुआ। तदुपरांत, हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में प्रसारित भारत के आदरणीय गृह मंत्री का विडिओ संदेश <https://youtu.be/7XQa1OOghDc> प्रस्तुत किया गया । प्रधान महालेखाकार ने अपने अध्यक्षीय



भाषण में हिंदी पखवाडे के सफल संचालन के लिए बधाई दी और व्याकरण की संकीर्णताओं से न डरकर राजभाषा हिंदी का खुलकर प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया ।

श्रीमती यशोदा, वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशा. एवं एएमजी-1 ने वर्ष 2023-24 हेतु हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहन योजना के तहत (लेप-I) तथा (लेप-II) कार्यालयों के पदाधिकारियों को प्रमाणपत्र और अनुभागों को रैलिंग ट्रॉफी प्रदान कीं । तत्पश्चात, हिंदी पखवाडे के सिलसिले में



आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशा. व एएमजी-1 (लेप-II), वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशा. (लेप-I) श्री पी के लालू तथा उप महालेखाकार/ प्रशा. (ले व ह) श्री बाषा मोहम्मद बी द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए । श्रीमती यशोदा, वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशा. व एएमजी-1 ने हिंदी पखवाडा 2023 के सफल आयोजन में सहयोग देने वाले सभी अनुभागों व पदाधिकारियों को धन्यवाद अर्पित किया । हिंदी गीत तथा समूह गान प्रतियोगिता के विजेताओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ सभा समाप्त हुई ।

शाखा कार्यालय, तृशूर

शाखा कार्यालय, तृशूर में भी प्रधान महालेखाकारों (लेखा एवं हकदारी), (लेखापरीक्षा-I) तथा (लेखापरीक्षा-II) के कार्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पखवाड़े की शुरुआत दिनांक. 14.09.2023 को हिंदी दिवस का पालन के साथ हुआ। पखवाड़े के दौरान छः प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। तीनों कार्यालयों के पदाधिकारियों ने प्रतियोगिताओं में उत्साह के साथ भाग लिया।

29 सितंबर को अप.02 बजे हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया। श्री बिजू जोसफ, वरिष्ठ उप महालेखाकार (ले व हक) अध्यक्ष रहे।

श्री राहुल पी, उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा) व संयोजक भी उपस्थित थे। हिंदी पखवाड़े के सिलसिले में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को वरिष्ठ उप महालेखाकार (ले व ह) तथा उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा) द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए। श्रीमती गेली कृष्णा, हिंदी अधिकारी (ले व ह) ने हिंदी पखवाड़ा 2023 के सफल आयोजन में सहयोग देने वाले सभी पदाधिकारियों को धन्यवाद अर्पित किया। विजेताओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ सभा समाप्त हुई।





गणतंत्र दिवस समारोह 2024

26 जनवरी 2024 को हमारे देश का पचहत्तरवां गणतंत्र दिवस महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) और प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से मनाया गया। माननीय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) श्री एस सुनिल राज द्वारा सम्मान गारद के निरीक्षण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तदुपरांत उनके द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया और मनोरंजन क्लब के सदस्यों द्वारा राष्ट्रगान प्रस्तुत किया गया।



श्री.बाषा मोहम्मद बी, लेखा एवं हकदारी कार्यालय के उप महालेखाकार/ प्रशासन के स्वागत भाषण के साथ सार्वजनिक सभा की शुरुआत हुई। प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा कर्मचारी सदस्यों को गणतंत्र दिवस का संदेश दिया। अपने गणतंत्र दिवस संदेश में, प्रधान महालेखाकार महोदय ने संविधान, जो देश का सर्वोच्च कानून है, में निहित सिद्धांतों का पालन करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कानून



के शासन को मजबूत करने और कार्यप्रणाली के प्रति सम्मान की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। विभाग के सभी कर्मचारियों को नियंत्रक-महालेखापरीक्षक, जो एक संवैधानिक प्राधिकारी है, के विनम्र प्रतिनिधि के रूप में उन्हें सौंपे गए कर्तव्यों को पूरा करना अपेक्षित है। प्रधान महालेखाकार ने सभी वरिष्ठ अधिकारियों को, बड़ी संख्या में नए भर्ती हुए कर्मचारियों को उचित मार्गदर्शन करने के लिए भी प्रोत्साहित किया ताकि अनुशासन और समर्पण के साथ-साथ विभाग के लोकाचार का सही मूल्य उनमें पैदा हो सके।

तदुपरांत, मनोरंजन क्लब द्वारा देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए गए। तीनों कार्यालयों के चुनिंदा



अधिकारियों / पदाधिकारियों को उनके द्वारा वर्ष 2023 के दौरान किए गए उत्कृष्ट कार्य का सम्मान करते हुए नकद पुरस्कार एवं श्रेष्ठता प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय के अधिकारियों / पदाधिकारियों को प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) ने और लेखापरीक्षा कार्यालयों के अधिकारियों / पदाधिकारियों को महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ने नकद

पुरस्कार एवं श्रेष्ठता प्रमाण-पत्र वितरित किए थे। वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन – लेखापरीक्षा I) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ गणतंत्र दिवस समारोह 2024 संपन्न हुआ।



श्रीमती सुशीला पी वी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग बैडमिंटन टूर्नामेंट - एक पर्व

जब हमारे कार्यालय द्वारा भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग बैडमिंटन टूर्नामेंट के आयोजन के बारे में पता चला, तो ऐसा लगा कि यह हमारे कार्यालय का एक और आयोजन है। प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा उद्घाटन के

दिन, इसमें भाग लेने का कोई विचार नहीं था। लेकिन अचानक कुछ ताकतों ने मुझे स्टेडियम की ओर खींच लिया। और लो, तब से एक उत्सव के माहौल सा महसूस होने लगा।



यह एहसास तो दूसरे दिन जश्न में बदल गया जब सेमी फाइनल मले का कार्यालय, कर्नाटक के साथ खेला गया। मैच मले. का कार्यालय, केरल ने 3-1 से जीता।

गेम	हमारे खिलाड़ी	विवरण	परिणाम
1.	मंजुष मोहन के	एकल-तीन सेट	जीत
2.	जमशिद टी के	एकल-तीन सेट	हार
3.	बेनेट एंटनी और शंकर पी गोपन	युगल-दो सेट	जीत
4.	बेनेट एंटनी	एकल - दो सेट	हार

शनिवार होने के बावजूद हमारे प्रधान महालेखाकार महोदय के नैतिक और ग्राउंड सपोर्ट के साथ-साथ दर्शकों का भी काफी समर्थन मिला। सभी ने खेल का आनंद लिया और खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।

फिर रविवार को महालेखाकार (आंध्रप्रदेश) के कार्यालय के साथ खेले जाने वाला फाइनल आया। यह एक तनावपूर्ण खेल था, लेकिन हमारे प्रधान महालेखाकार महोदय और समर्पित दर्शकों के भरपूर समर्थन से हमारी टीम ने मैच जीत लिया।

गेम	हमारे खिलाड़ी	विवरण	परिणाम
1.	मंजुष मोहन के	एकल - दो सेट	हार
2.	जमशिद टी के	एकल - तीन सेट	हार
3.	बेनेट एंटनी और शंकर पी गोपन	युगल - दो सेट	जीत
4.	बेनेट एंटनी	एकल - दो सेट	जीत
5	मंजुष मोहन के और शंकर पी गोपन	युगल - दो सेट	जीत

इस प्रकार हम टीम प्रतियोगिताओं में दक्षिण क्षेत्र के विजेता बने।

ओपन इवेंट में सुश्री आशना रॉय महिला एकल विजेता रही और मिश्रित युगल में श्री मंजुष मोहन के के और सुश्री आशना रॉय उपविजेता बने।

दक्षिण क्षेत्र की ओपन प्रतियोगिताओं के अन्य परिणाम और अंतर क्षेत्रीय प्रतियोगिताओं के लिए योग्यताएँ इस प्रकार थी।

1. पुरुष एकल- श्री डी सरथ (पी डी ए सिकंदराबाद) जीता और श्री सी रोहित यादव (मले. का कार्यालय, आंध्र प्रदेश) उपविजेता रहे।
2. पुरुष युगल श्री डी संजय श्रीवत्स और श्री मोहम्मद रेहान (मले. का कार्यालय, तमिलनाडु) ने दक्षिण क्षेत्र पुरुष युगल जीता, जबकि सुश्री वी आर किरण मौली और श्री सिद्धार्थ एलंगो (मले. का कार्यालय, आंध्र प्रदेश) उपविजेता रहे।
3. मिश्रित युगल के विजेता श्री एम अर्जुन कुमार रेड्डी (मले. का कार्यालय, तेलंगाना) और सुश्री सुश्वेता एन (मले. का कार्यालय, आंध्र प्रदेश) थे।
4. महिला एकल उपविजेता सुश्री सुश्वेता एन(मले. का कार्यालय, आंध्र प्रदेश)थी।



II. अंतर क्षेत्रीय प्रतियोगिताएं

टीम प्रतियोगिताओं के क्वार्टर फाइनल मैच मले. का कार्यालय, दिल्ली ऑडिट के खिलाफ मले. का कार्यालय, केरला ने 3-1 से जीता।

गेम	हमारे खिलाड़ी	विवरण	परिणाम
1.	विष्णु प्रसाद	एकल - तीन सेट	हार
2.	मंजुष मोहन के के	एकल- तीन सेट	जीत
3.	बेनेट एंटनी और शंकर पी गोपन	युगल- तीन सेट	जीत
4.	बेनेट एंटनी	एकल- वॉक ओवर	जीत

मुकाबला बहुत कड़ा था और नाखून चवाने वाला रहा। हमारे प्रधान महालेखाकार महोदय, गुप अधिकारियों व दर्शकों ने टीम का उत्साहवर्धन किया।

सेमी फाइनल मले. का कार्यालय, ग्वालियर के खिलाफ खेलकर म.ले. का कार्यालय, केरला ने 3-1 से जीता।

गेम	हमारे खिलाड़ी	विवरण	परिणाम
1.	विष्णु प्रसाद	एकल- दो सेट	जीत
2.	मंजुष मोहन के के	एकल- दो सेट	हार
3.	बेनेट एंटनी और शंकर पी गोपन	युगल-दो सेट	जीत
4.	बेनेट एंटनी	एक - दो सेट	जीत



इस मुकाबले के दर्शकों में हमारे प्रधान महालेखाकार महोदय, ग्रुप अधिकारीगण व बहुसंख्यक नवनियुक्त पदाधिकारी थे, सभी ने मिलकर टीम का उत्साहवर्धन किया।

फाइनल मले. का कार्यालय, पश्चिम बंगाल के खिलाफ खेलकर मले. का कार्यालय, केरला ने 3-1 से हारा। हमारी टीम ने जी-जान से संघर्ष किया लेकिन मजबूत टीम से हार स्वीकार करनी पड़ी।

गेम	हमारे खिलाड़ी	विवरण	परिणाम
1.	मंजुष मोहन के के	एकल - दो सेट	जीत
2.	बेनेट एंटनी	एकल - दो सेट	जीत
3.	बेनेट एंटनी और शंकर पी गोपन	युगल - दो सेट	हार
4.	जमशिद टी के	एकल - दो सेट	हार

अंतर क्षेत्रीय प्रतियोगिताओं के ओपन प्रतियोगिताओं के परिणाम निम्नलिखित रहा :

महिला एकल – सुश्री भव्या ऋषि (दिल्ली ऑडिट) ने जीता और सुश्री दीपाली गुप्ता (म.ले. का कार्यालय, बिहार) उपविजेता रही।

पुरुष एकल- श्री ला तलार (म.ले. का कार्यालय, अरुणाचल प्रदेश) ने जीता और श्री कार्तिक जिंदल (म.ले. का कार्यालय, हिमाचल प्रदेश) उपविजेता रहे।

महिला युगल – सुश्री भाव्या ऋषि और सुश्री नमिता पठानिया (दिल्ली ऑडिट) जीते तो सुश्री चिमरन कलिता और सुश्री दीपाली गुप्ता (म.ले. का कार्यालय, बिहार) उपविजेता रहे।

पुरुष युगल- श्री बृजेश यादव और श्री इमान सोनोवाल (म.ले. का कार्यालय, पश्चिम बंगाल) जीते और श्री डी संजय श्रीवत्स तो श्री

एम डी रेहान (म.ले. का कार्यालय, तमिलनाडु) उपविजेता रहे।

मिश्रित युगल- श्री विनय कुमार सिंह (मले. का कार्यालय, झारखंड) और सुश्री सुधा कल्याण (ई सी आर भुवनेश्वर) जीते तो श्री ओइनम ऐम्सन और सुश्री एन सोमीबाला (म.ले. का कार्यालय, मणिपुर) उपविजेता रहे।



प्रदेश) के खिलाफ सीधे दो सेटों में जीत हासिल की।

फाइनल में श्री फिरोज शाह तीनों सेटों में प्रतिद्वंद्वी मले. का कार्यालय, तेलंगाना के श्री ए वी एस मूर्ति को कड़ी टक्कर देते हुए (2-1) से विजेता बने। अंतरक्षेत्रीय पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान, श्री फिरोज शाह को खेल में



वैटरन्स टूर्नामेंट

वैटरन्स टूर्नामेंट 35+, 40+, 45+, 50+ और 55+ की आयु श्रेणी में खेला जाती है। प्रत्येक श्रेणी में महिला और पुरुष एकल, महिला और पुरुष युगल तथा मिश्रित युगल होते हैं।

55+ - पुरुष एकल सेमी फाइनल में मले. का कार्यालय, केरला के श्री फिरोज शाह ने श्री अरूप बुरागोहेन (मले. का कार्यालय, अरुणाचल

उनके योगदान के लिए सम्मानित करके एक सरप्राइज का अनावरण किया गया।

50+- पुरुष युगल के फाइनल में मले. का कार्यालय, केरला के श्री फिरोज शाह और श्री वी एम अनिल कुमार ने अपने प्रतिद्वंद्वी श्री के पी रूपेश (एफ एंड सी केरल) और श्री उणिक्कृष्ण वर्मा (मले. का कार्यालय, गुजरात) को सीधे दो सेटों में हराया।



अन्य प्रतियोगिताओं के परिणाम इस प्रकार है;

55+ महिला एकल, महिला और पुरुष युगल तथा मिश्रित युगल में कोई प्रतिभागी नहीं थे।

50+ पुरुष एकल – श्री के पी रूपेश (एफ एंड सी केरल) विजेता रहे तो श्री उष्णिक्कृष्ण वर्मा (म.ले. का कार्यालय, गुजरात) उपविजेता।

महिला एकल, महिला युगल तथा मिश्रित युगल में कोई प्रतिभागी नहीं थे।

45+ महिला एकल में सुश्री अनामिका दुर्गपुरोहित (मले. का कार्यालय, महाराष्ट्र) विजेता रही और सुश्री निमिषा कुमारी (नि.मलेप. दिल्ली) उपविजेता रही।

पुरुष एकल में श्री एम जेरी मार्टिन (मले. का कार्यालय, चेन्नई) विजेता और श्री एस एस कण्णन (पी डी ए सी चेन्नई) उपविजेता रहे।

पुरुष युगल – श्री पी एल नारायण और श्री आर श्रीनिवास मोहंती, मले. का कार्यालय, तेलंगाना के विजेता तथा श्री अनिर्बान दास (मले. का कार्यालय, पश्चिम बंगाल) और श्री शुभकांत मोहंती (मले. का कार्यालय, ओडिशा) उपविजेता थे।

मिश्रित युगल – श्री एस एस कण्णन (पी डी ए सी चेन्नई) और सुश्री अनामिका दुर्गपुरोहित (म.ले. का कार्यालय, महाराष्ट्र) विजेता तथा श्री अनिर्बान दास (म.ले. का कार्यालय, पश्चिम बंगाल) और सुश्री निमिषा कुमारी, नि.म.ले.प. दिल्ली उपविजेता थी।

महिला युगल में कोई प्रतिभागी नहीं थे।

40+ महिला एकल – सुश्री एम राधिका म.ले. का कार्यालय, तेलंगाना विजेता रही तो सुश्री गायत्री मिश्रा, डीडी (सी आर ए) ओडिशा उपविजेता बनी।

पुरुष एकल – श्री आशीष शर्मा (मले. का कार्यालय, पंजाब) विजेता और श्री टी कृष्णा {डी जी ए (एफ एंड सी) हैदराबाद} उपविजेता बने।

पुरुष युगल – श्री अभिषेक अग्रवाल (मले. का कार्यालय, उत्तराखंड) और श्री आशीष शर्मा (मले. का कार्यालय, पंजाब) विजेता तो श्री चरणजीत सिंह (मले. का कार्यालय, आंध्र प्रदेश) और श्री टी कृष्णा {डी जी ए (एफ एंड सी हैदराबाद} उपविजेता थे।

मिश्रित युगल – श्री आशीष शर्मा (म.ले. का कार्यालय, पंजाब) और सुश्री भावना शर्मा (मले. का कार्यालय, हरियाणा) विजेता तो श्री कनिष्क दास (मले. का कार्यालय, पश्चिम बंगाल) और सुश्री गायत्री मिश्रा (डी डी सी आर ए ओडिशा) उपविजेता थी।

महिला युगल में कोई प्रतिभागी नहीं थे।

35+ महिला एकल – सुश्री सुश्वेता एन (मले. का कार्यालय, आंध्र प्रदेश) विजेता तो सुश्री टी दीप्ति (मले. का कार्यालय, तेलंगाना) उपविजेता बनी।

पुरुष एकल – श्री सतिंदर मलिक (म.ले. का कार्यालय, पंजाब) विजेता तो श्री रोमित डोडेजा {डी जी ए(सी) अहमदाबाद} उपविजेता बने।

महिला युगल – सुश्री सुश्वेता आर (म.ले. का कार्यालय, आंध्र प्रदेश) और सुश्री दीप्ति (म.ले. का कार्यालय, तेलंगाना) विजेता तथा सुश्री अमृता मुखर्जी और सुश्री सायंतिका दत्ता (म.ले. का कार्यालय, कोलकाता) उपविजेता थी।

पुरुष युगल – श्री मोहम्मद रेहान (मले. का कार्यालय, तमिलनाडु) और श्री रोमित डोडेजा (डी जी ए सेंट्रल अहमदाबाद) विजेता तो श्री साहिल कटलारिया और श्री सतिंदर मलिक (म.ले. का कार्यालय, पंजाब) उपविजेता थे।

मिश्रित युगल – श्री रंजीत कुमार बंडा
(मले. का कार्यालय, ओडिशा) और सुश्री टी दीप्ति
(मले. का कार्यालय, तेलंगाना) विजेता तो श्री

पंकज नैथानी (पी डी ए सेंट्रल चंडीगढ़) और सुश्री
अमृता मुखर्जी (मले. का कार्यालय, कोलकाता)
उपविजेता थीं ।



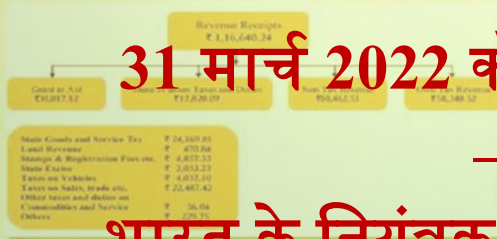
हमेशा की तरह अपने सभी मैच समर्पित प्रयास और विभिन्न रणनीतियों का पालन करके हमारी टीम ने तुलनात्मक युवा विरोधियों के खिलाफ जीत हासिल की, इसलिए हृदय की गहराइयों से बधाई । इस टूर्नामेंट से हमारे मन को संतुष्ट और इसको यादगार बनाने के लिए खिलाड़ियों को और इस आयोजन को सफल बनाने वाले सभी को दिल से सलामी और आभार ।

Failure of the assessing officer to apply correct rule led to short levy of tax and interest of ₹0.84 crore.

Taxes/VAT on sales, trade, etc.

Absence of basic checks in the records in the database by the officials at Regional/ Sub-Regional Transport Offices resulted in non/ short levy of tax amounting of ₹72.98 crore.

Taxes on Vehicles

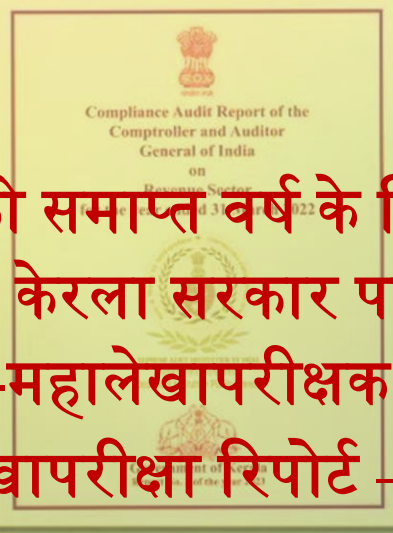
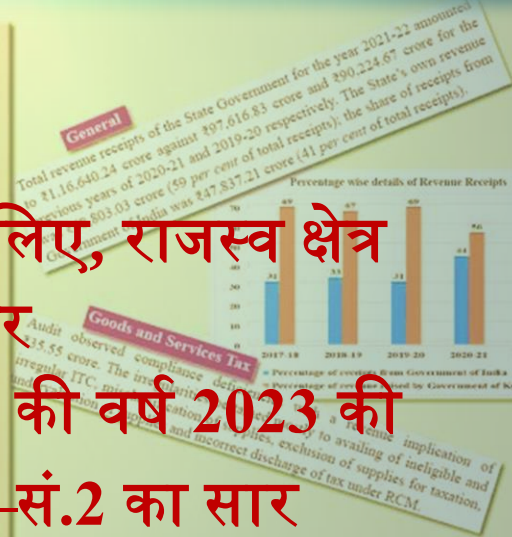


Non-realisation of additional security amount fixed by the Government resulted in non-levy of ₹2.51 crore.

State Excise

Splitting up of property resulted in short collection of revenue amounting to ₹0.08 crore.

Stamp duty and Registration fee



31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए, राजस्व क्षेत्र – केरला सरकार पर भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की वर्ष 2023 की अनुपालन लेखापरीक्षा रिपोर्ट –सं.2 का सार

31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए, भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की अनुपालन लेखापरीक्षा रिपोर्ट, भारत के संविधान के अनुच्छेद 151(2) के तहत केरल के राज्यपाल को प्रस्तुत करने के लिए तैयार की गयी है ताकि राज्य विधान-सभा के समक्ष प्रस्तुत की जा सके। इस रिपोर्ट में केरला सरकार के राजस्व क्षेत्र के तहत आने वाले विभागों, जिसमें राज्य माल एवं सेवा कर विभाग, परिवहन विभाग, आबकारी विभाग तथा पंजीकरण विभाग शामिल हैं, की अनुपालन लेखापरीक्षा के प्रमुख परिणाम अंतर्विष्ट है।

इस रिपोर्ट में उल्लिखित मामले, वे हैं जो वर्ष 2021-2022 से संबंधित अभिलेखों के नमूना लेखापरीक्षा के दौरान ध्यान में आए, और वे भी हैं जो पूर्व वर्षों में ध्यान में आए तो थे लेकिन पिछली रिपोर्टों में समाविष्ट नहीं किए जा सके। जहाँ आवश्यक लगे, वर्ष 2021-2022 के बाद की अवधि के मामले भी शामिल किए हैं।

भारत के नियंत्रक - महालेखापरीक्षक द्वारा जारी लेखापरीक्षण मानकों के अनुरूप लेखापरीक्षा आयोजित की गयी। इस रिपोर्ट में एक विषय विनिर्दिष्ट अनुपालन लेखापरीक्षा सहित तैंतीस पैराएं शामिल हैं जो ₹.127.17 करोड़ के राजस्व प्रभाव को समाविष्ट करते हैं। महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा टिप्पणियां नीचे दी गयी है :

I. सामान्य

पूर्व वर्षों यानिकि वर्ष 2020-2021 तथा 2019-2020 के लिए क्रमशः ₹ 97, 616.83 करोड़ तथा ₹90, 224.67 करोड़ की तुलना में वर्ष 2021-2022 के लिए राज्य सरकार की कुल राजस्व प्राप्तियां ₹ 1,16, 640.24 करोड़ राशि की थी। राज्य का अपना राजस्व ₹ 68, 803.03 करोड़ (कुल प्राप्तियों का 59 प्रतिशत) का था; भारत सरकार की प्राप्तियों का शेयर ₹ 47, 837.21 करोड़ (कुल प्राप्तियों का 41 प्रतिशत) था।

राजस्व के कुछ प्रधान शीर्षों पर राजस्व की बकाया राशि ₹ 28,258.39 करोड़ थी जोकि राज्य के कुल राजस्व का 24.23 प्रतिशत है।

जून 2022 के अंत में, दिसंबर 2021 तक जारी 2,625 निरीक्षण रिपोर्टों से संबंधित ₹ 5,084.70 करोड़ समाविष्ट करनेवाले 16,701 पैराग्राफ बकाए थे।

II. वस्तु एवं सेवा कर

‘जीएसटी भुगतानों तथा विवरणियों की फाईलिंग में विभाग की असावधानी’ पर विषय विनिर्दिष्ट अनुपालन लेखापरीक्षा

लेखापरीक्षा ने ₹ 35.55 करोड़ के राजस्व उलझाव सहित अनुपालन कमियां देखी। अनियमितताएं अधिकतर अयोग्य तथा अनियमित आईटीसीयों का लाभ उठाना, आपूर्तियों का गलत वर्गीकरण, आपूर्तियों को कराधान से छूट देना, आपूर्तियों का अवमूल्यन तथा आरसीएम के अंतर्गत कर का गलत निर्वहन आदि से संबंधित थी।

III. बिक्री, व्यापार आदि पर कर / मूल्यवर्धित कर

सही नियम लागू करने में कर निर्धारण अधिकारी की विफलता के कारण ₹ 0.84 करोड़ के कर एवं ब्याज की अल्प उगाही हुई।

एक अयोग्य कर निर्धारिति को कंपाउंडिंग कर लागू करके अनुचित लाभ देने के परिणामस्वरूप ₹ 0.34 करोड़ की राशि के कर एवं ब्याज की अल्प उगाही हुई।

कंपाउंडिंग योजना के तहत एक कर निर्धारिति को अनियमित इनपुट कर साख देने के परिणामस्वरूप ₹ 0.48 करोड़ की राशि के कर एवं ब्याज की अल्प उगाही हुई।

अयोग्य इनपुट कर साख की अनुमति देकर एक निर्धारिति को ₹ 0.48 करोड़ रुपये का अनुचित लाभ।

मूल्यांकनकर्ता प्राधिकारी द्वारा कर की रियायती दर प्रदान करने के लिए आवश्यक दस्तावेजों को सत्यापित करने में हुई विफलता के कारण ₹ 3.84 करोड़ की राशि के कर एवं ब्याज की अल्प उगाही हुई।

मूल्यांकनकर्ता प्राधिकारी द्वारा निर्धारण पूरा करते समय दमित टर्नओवर का पता लगाने में हुई विफलता के कारण ₹ 0.60 करोड़ की राशि के कर एवं ब्याज की अल्प उगाही हुई।

मूल्यांकनकर्ता प्राधिकारी द्वारा अंतर्राज्यीय स्टॉक अंतरण को सत्यापित करने में हुई विफलता के कारण ₹ 0.50 करोड़ की राशि के कर एवं ब्याज की अल्प उगाही हुई।

बगैर संबंधित दस्तावेजों के अंतर्राज्यीय विक्रय रिटर्न के लिए अनियमित छुट के परिणामस्वरूप ₹ 0.41 करोड की राशि के कर एवं ब्याज की अल्प उगाही हुई ।

कुल बिक्री टर्नओवर को दबाकर एकत्रित कर के गैर-प्रेषण के परिणामस्वरूप ₹ 0.48 करोड की राशि के कर एवं ब्याज की अल्प उगाही हुई ।

IV. वाहनों पर कर

क्षेत्रीय / उप क्षेत्रीय परिवहन कार्यालयों के पदाधिकारियों द्वारा डाटाबेस के अभिलेखों में बुनियादी जांचों के अभाव के परिणामस्वरूप ₹ 72.98 करोड की राशि के कर एवं ब्याज की गैर /अल्प उगाही हुई ।

V. राज्य उत्पाद

सरकार द्वारा निर्धारित अतिरिक्त प्रतिभूति राशि के गैर-वसूली के कारण ₹ 2.51 करोड की गैर उगाही हुई ।

नए लाइसेंस देने के बजाय विदेशी शराब लाइसेंसों के अनियमित अंतरण के कारण ₹ 2.17 करोड की अल्प उगाही हुई ।

अप्राधिकृत पुनर्गठन के लिए जुर्माना न लगाने तथा नियमितीकरण के लिए शुल्क वसूल न करने के कारण ₹ 1.32 करोड की गैर-वसूली हुई ।

VI. स्टाम्प शुल्क एवं पंजीकरण फी

संपत्ति के बंटवारे के कारण ₹ 0.08 करोड की राशि के राजस्व की अल्प वसूली हुई ।

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग के हैदराबाद में आयोजित दक्षिणांचल फुटबॉल टूर्नामेंट और कोलकत्ता में आयोजित इंटरजोन फुटबॉल टूर्नामेंट में छठी बार विजेता बनीं प्रधान महालेखाकारों के कार्यालय, केरल की टीम



अखिल भारतीय सिविल सेवा टेबिल टेन्निस टूर्नामेंट में महिला युगल प्रतियोगिता में दूसरा स्थान प्राप्त टीम

सुश्री अंजू तोमस, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) के कार्यालय



कोलकत्ता में आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा
विभाग इंटरजोन क्रिकेट टूर्नामेंट में विजेता बनी
महालेखाकारों के कार्यालय (केरल) के टीम



हार्दिक बधाई

साहित्यिक



मंदिरों का शहर.....खंडहरों का भी



श्रीमती यशोदा
वरि.उप महालेखाकार/ प्रशासन

भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित और यूनेस्को के 'विश्व के विरासत स्थलों' में शामिल किया गया नगर है हम्पी । मध्यकालीन हिंदू राज्य विजयनगर साम्राज्य की राजधानी हम्पी मंदिरों का शहर है, जिसका नाम पंपा से लिया गया है । यह नगर तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित है और पंपा तुंगभद्रा नदी का पुराना नाम है । पौराणिक ग्रंथ रामायण में भी हम्पी का उल्लेख वानर राज्य किष्किन्धा की राजधानी के तौर पर किया गया है । हम्पी से पहले एनेगुंदी विजयनगर की राजधानी हुआ करती थी । यह एक

समृद्ध और खुशहाल शहर था जिसमें कई मंदिर, खेत और बाज़ार थे जो पुर्तगाल और फारस के व्यापारियों को आकर्षित करते थे । साम्राज्य अपने चरम पर पहुंच गया जबकि दक्षिण के अन्य राज्य दिल्ली सल्तनत द्वारा पराजित हो रहे थे । तुगलक ने राज्य की देखभाल के लिए एक सेनापति नियुक्त किया । हालाँकि, जनरल दिल्ली लौट गए और दो लोगों को प्रभारी नियुक्त किया । उन्होंने धीरे-धीरे और तेजी से अपने क्षेत्रों का विस्तार किया ।

लोगों ने दिल्ली के आक्रमणकारियों को दूर रखने के लिए उन पर

भरोसा किया और अंततः उनसे हाथ मिला लिया । इस एकीकृत राज्य को शक्तिशाली विजयनगर साम्राज्य के रूप में जाना जाने लगा, जिसके नियंत्रण में पूरा दक्षिण भारत था ।

हालाँकि, 14^{वीं} शताब्दी की शुरुआत में परिदृश्य बदल गया जब मुहम्मद बिन तुगलक दिल्ली में सिंहासन पर बैठे । उनके शासनकाल में आंतरिक विद्रोहियों को बढ़ावा मिला, जिनमें से एक ने हम्पी के पास एनेगुंडी नामक एक छोटे राज्य में शरण ली थी । अंततः तुगलक की सेना उस राज्य को हरा दिया और विद्रोही को मार

डाला । विजयनगर साम्राज्य के अस्तित्व में आने के तुरंत बाद, इसके तत्काल उत्तर में एक और साम्राज्य की भी स्थापना की गई। मुहम्मद बिन तुगलक की सेना के एक कमांडर अलाउद्दीन हसन बहमन शाह ने तुगलक के खिलाफ विद्रोह के बाद दक्कन में पहले मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना की, जिसे बहमनी सल्तनत कहा गया। दो शताब्दियों की अवधि में राज्य-अहमदनगर, बरार, बीजापुर, बीदर और गोलकोंडा के पांच दक्कन सल्तनतों में विभाजित हो गया ।

16^{वीं} शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य शासक आलिया राम राय का अपनी बदलती वफादारी के कारण अक्सर सल्तनत के साथ संघर्ष होता था । आखिरकार, सल्तनतों ने एक गठबंधन बनाया और विजयनगर पर आक्रमण किया । फिर विजयनगर साम्राज्य और दक्कन सल्तनत के बीच तालीकोटा की प्रतिष्ठित

लड़ाई शुरू हुई जिसमें आलिया राम राय को हराया और मार डाला ।

यदि विजयनगर सेना के दो मुस्लिम जनरलों ने अचानक पाला न बदला होता तो राया युद्ध जीत जाता । मुस्लिम अधिकारियों ने अंतिम क्षण में अपनी वफादारी सल्तनत के प्रति दिखादी और पूरी तरह से चकित राया को पकड़ लिया और फिर, युद्ध के मैदान में उसका सिर काट दिया । इससे विजयनगर सेना के भीतर अराजकता और भ्रम पैदा

हो गया, तब पूरी तरह से लड़ाई हार गई । उन्होंने युद्ध के बाद छह महीने तक हम्पी में आश्चर्यजनक स्मारकों और अन्य बुनियादी ढांचे पर विजय प्राप्त की, लूटपाट की, उन्हें नष्ट किया, लूटा और जला दिया और फिर इसे खंडहर में छोड़ दिया ।

द्रविड़ शैली की वास्तुकला जिसमें मंदिर, महल, बाज़ार, मंडप, उद्यान और सैन्य संरचनाएँ शामिल हैं, अब पूरे शहर में जीर्ण-शीर्ण अवस्था में बिखरी हुई हैं । अब, यह ज़मीन का एक उजड़ा हुआ बंजर क्षेत्र है जो एक हिंसक अतीत की कहानी बयान करता है ।

मंदिरों का शहर हंपी आज खंडहरों का



शहर है । हम्पी में बने दर्शनीय स्थलों में सम्मिलित हैं-विरुपाक्ष मंदिर, रघुनाथ मंदिर, नरसिम्हा मंदिर, सुग्रीव गुफा, विठाला मंदिर, कृष्ण मंदिर, हजारा राम मंदिर, कमल महल और महानवमी डिब्बा । हम्पी से 6 किलोमीटर दूर तुंगभद्रा बांध है ।

विरुपाक्ष मंदिर



हम्पी के कई आकर्षणों में से मुख्य है हेमकुटा पहाड़ियों के निचले हिस्से में स्थित विरुपाक्ष मंदिर। इसको पंपापटी मंदिर भी कहा जाता है। मंदिर अपने निर्माण की विविधता और गुणवत्ता के लिए उल्लेखनीय है, जो एक अच्छी तरह से विकसित द्रविड़ स्थापत्य शैली का उदाहरण है, साथ ही उन पैतलों के नीचे कलाकारों के खुदे हुए नाम भी हैं जिन पर उन्होंने काम किया था। यह प्राचीन मंदिर भगवान् शिव के रूपों में से एक 'विरुपाक्ष' (विरूप

+ अक्ष = विपरीत अक्ष वाले) को समर्पित है जिसे “प्रसन्न विरुपाक्ष मंदिर” के नाम से भी जाना जाता है। विरुपाक्ष मंदिर, पट्टदकल के अन्य मंदिरों की तरह पूर्व मुखी बनाया गया था, जिसमें एक ढके हुए प्रदक्षिणा पथ से घिरा हुआ एक चौकोर गर्भगृह था जिसमें एक शिव लिंग था। इस मंदिर की मुख्य विशेषता यहां का शिवलिंग है जो दक्षिण की ओर झुका हुआ है। इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग की कहानी रावण और भगवान शिव से जुड़ी हुई है। पौराणिक

कथाओं के अनुसार रावण जब शिवजी के दिए हुए शिवलिंग को लेकर लंका जा रहा था तो यहां पर रुका था। उसने इस जगह एक बूढ़े आदमी को शिवलिंग पकड़ने के लिए दिया था। उस बूढ़े आदमी ने शिवलिंग को जमीन पर रख दिया, तब से वह शिवलिंग यहीं जम गया और लाख कोशिशों के बाद भी हिलाया नहीं जा सका। मंदिर की दीवारों पर उस प्रसंग के चित्र बने हुए हैं जिसमें रावण शिव से पुनः शिवलिंग को उठाने की प्रार्थना कर रहे हैं और

भगवान शिव इंकार कर देते हैं। यहां अर्ध सिंह और अर्ध मनुष्य की देह धारण किए नृसिंह की 6.7 मीटर ऊंची मूर्ति भी है। नींव के फुटप्रिंट लेआउट के आधार पर, परिसर के भीतर एक समय में 32 मंदिर थे, लेकिन अधिकांश नष्ट हो गए हैं। गर्भगृह की दीवारें, साथ ही पास के मंडप स्थान की दीवारें जटिल नक्काशी की गई है। ये नक्काशीयाँ शैववाद, वैष्णववाद और शक्तिवाद के देवताओं और विषयों को दर्शाती हैं, जिनमें नरसिम्हा और वराह (वैष्णववाद), भैरव और नटराज (शैववाद), हरिहर (आधा शिव-आधा विष्णु), लकुलिसा (शैववाद), ब्रह्मा, दुर्गा,

सरस्वती, लक्ष्मी और अन्य शामिल हैं। हिंदू देवी-देवताओं के अलावा, कई पैनल लोगों को जोड़े के रूप में, प्रेमालाप और मिथुन में, या आभूषण पहने हुए या काम के उपकरण ले जाते हुए चित्रित करते हैं। जॉर्ज मिशेल के अनुसार, विरुपाक्ष मंदिर की बाहरी दीवारों और बरामदे पर नक्काशी "विविध मूर्तिकला रचनाओं के वाहन हैं, जो अब तक किसी भी प्रारंभिक चालुक्य स्मारक पर पाए गए से सबसे अधिक हैं।"

एलोरा गुफाओं का प्रसिद्ध कैलाश मंदिर इसी मंदिर से प्रेरित था, जबकि विरुपाक्ष मंदिर कांचीपुरम के कैलाशनाथ

मंदिर से प्रेरित था। मंदिर में ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण शिलालेख हैं जो 8^{वीं} शताब्दी के भारतीय समाज और संस्कृति पर प्रकाश डालते हैं। संस्कृति को आस्था और त्योहारों, कला और वास्तुकला, संगीत और नृत्य और व्यंजन में वर्गीकृत किया जा सकता है। ऐसे में, लोगों को शांति और सद्भाव में एक साथ बांधने का आधार और शक्ति है, संस्कृति। कर्नाटक की संस्कृति विभिन्न रीति-रिवाजों और परंपराओं का एक "सुसंपन्न रंगावली" है।

नया साल



श्री अनुराग शुक्ला
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नव वर्ष के आगमन की सुगबुगाहट सभी को आंदोलित करने लगती है। सभी अपने-अपने तरीके से एक नयी ऊर्जा से उद्धेलित होकर साल के स्वागत की तैयारी में लग जाते हैं। दिसम्बर 31 मध्यरात्रि से फोन काल्स और संदेशों की आवाजाही का सैलाब सा उमड़ पड़ता है। एक दूसरे का अभिवादन, शुभकामनाएं, देर रात तक पार्टी, सारा वातावरण प्रकाशमय हो जाता है। हम में से लगभग हर कोई अपने जीवन में सुधार की कुछ न कुछ प्रतिज्ञा अवश्य करता है। सही मायने में यूँ कहना अतिरिक्त न होगी कि भीष्म प्रतिज्ञा करता है मगर सामान्यतः जनवरी माह समाप्त होते-होते अधिकतर लोगों की प्रतिज्ञाएं धराशायी हो जाती हैं और जोश के किले ढह जाते हैं। हर किसी का अपना कोई न कोई बहाना भी होता है। जीवन की जटिलताओं में हम कुछ ऐसा उलझते हैं कि अपने जीवन में सुधार हेतु एक छोटी सी राह में कुछ दूर तक नहीं चल पाते। आखिर ऐसा क्यों होता है ?? कुछ तो कारण आवश्यक होना चाहिए !! समय की कमी, इच्छाशक्ति की दुर्बलता, लापरवाही,

स्वयं से कम स्नेह जैसे कुछ कारण पटल पर आते हैं। सरल भाषा में कहूँ तो न कर पाने का बहाना बनाना। कटु है मगर सत्य है !!

चलिए आपको एक सत्य घटना से अवगत कराता हूँ। मेरा एक घनिष्ठ मित्र है 'नरेंद्र'। बहुत ही जोशीला, सामाजिक व व्यवहार कुशल। मगर उसकी एक आदत मुझे अखरती थी। वह आदत थी धूम्रपान बल्कि चैन स्मोकिंग कहूँ तो अधिक बेहतर होगा। एक दिन में दो से तीन पैकेट आराम से धुंए में परिवर्तित कर देता था। नया साल आने वाला था, हर बार की तरह मैंने अपनी प्रतिज्ञा ले ली थी कि अब आंधी आए या तूफान मैं अपनी प्रतिज्ञा पर डटा रहूँगा। लगे हाथ मैंने नरेंद्र से भी दोस्ती की खातिर नव वर्ष से धूम्रपान त्यागने की गुजारिश कर दी। मेरे इस तरह अनायास कुछ मांगने से वह पहले तो कुछ हतप्रभ हुआ और कुछ पल मुझे देखने के पश्चात् उसने अपना हाथ पॉकेट की तरफ बढ़ाया और सिगरेट का एक पैकेट निकालकर बाहर फेंक दिया। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा और मैंने उसे गले से लगा

दिया। उस समय हम जामनगर, गुजरात में तैनात थे और गुजरात की कटिंग चाय बंधुत प्रचलित है।

अतः मैंने कहा ‘चलो एक कटिंग हो जाए’। हम दोनों बातें करते करते चाय की दूकान पहुंच गए। मैंने दो कटिंग का इशारा किया और जब नजर घुमाई तो देखता हूँ कि नरेंद्र दूकानदार से इशारे में एक सिगरेट मांग रहा है ?? !! मैंने निराशा से स्टूल में बैठते हुए उसको घूरा और झल्लाकर कहा कि जब यही करना था तो इतना नाटक क्यों किया ?? उसने मुस्कुराते हुए मेरे कंधे पर हाथ रखा और सिगरेट का जोरदार कश लेते हुए कहा ‘यह आखिरी है’ तेरी दोस्ती के लिए नए साल से नहीं मैं आज ही से सिगरेट त्यागता हूँ ???? मैंने उसे टकटकी लगाकर देखा, सच कहूँ तो मुझे यकीन सा था कि इस बार भी मैं पोपट बनूंगा। मगर मैं इस बार भी गलत था, उस दिन के बाद नरेंद्र ने कभी धूम्रपान नहीं किया। आप सोच रहे हैं कि मैं इस घटना द्वारा क्या कहना चाहता हूँ ?? !! नरेंद्र ने मुझे इस सोच पर विवश कर दिया था कि कोई भी अच्छा काम नव वर्ष या किसी तिथि व मुहूर्त का मोहताज नहीं होता। अच्छा काम तो अपने आप में ही एक शुभ मुहूर्त होता है। सच्ची भावना से, उमंग से जब अवसर मिले आरंभ कर दीजिए। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मुहूर्त वगैरह का इंतजार हम टालने हेतु करते हैं और यह प्रबल इच्छा शक्ति कि कमी दर्शाता है। कहते हैं न ‘जब जागो तभी सवेरा’।

सच कहूँ जब चारों ओर नव वर्ष मंगलमय की अफरा तफरी होती है तो मैं भीतर से भयभीत हो जाता हूँ, ये सोचकर कि

एक कीमती साल चुटकी में भूत के गर्त में चला गया और हम वहीं के वहीं हैं। हैप्पी न्यू इयर वाट्सऐप में संदेश प्रवाह से आगे बढकर कुछ करने का स्वर्णिम अवसर अवश्य प्रदान करता है। मगर न जाने क्यों जनवरी का पहला पखवाडा गुजरते-गुजरते जीवन ढाक के तीन पात की चाल पुनः चल पडता है। लगता है हम अपने आप से तनिक भी स्नेह नहीं करते, तभी तो स्वयं के जीवन में सुधार हेतु एक छोटी सी प्रक्रिया भी जीवन में कश्मकश का बहाना बनाते हुए बली चढा देते हैं। किसी समस्या ने जकड लिया है जो दुनिया भर के नुस्खे अपनाने लगेंगे हम। मगर रोज सुबह उठकर व्यायाम या मॉर्निंग वॉक करना जो शरीर को स्वस्थ रखने में अत्यंत लाभकारी है – यह नहीं होगा। सच कहूँ तो मैं अपने मन की भडास इस लेख के माध्यम से निकाल रहा हूँ और इस बात से भी आश्वस्त हूँ कि हममें से कई इस कुंठा से ग्रसित हैं कि हम एक नन्हीं सी शुरुआत भी क्यों नहीं कर पाते ??? यह जानते हुए भी कि वह हमारे जीवन में सार्थक परिवर्तन व उत्साह का संचार करेगी।

इस साल में मैंने ‘हैप्पी न्यू इयर’ की रट से आगे बढने को ठान ली है। अब नहीं तो कभी नहीं। आपको भी यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि मेरी प्रतिज्ञा जनवरी का पहला पखवाडा सफलतापूर्वक पार कर चुकी है। परिणामस्वरूप एक अतृप्त खुशी है अपने लिए अपने आप से लडने की। कहते हैं एक सफलता से बडा कोई प्रेरक नहीं होता। क्या सोच रहा है जनाब ??? क्या आप भी तैयार हैं अपने आप को चुनौती देने के लिए ???



एकता में ही बल है



श्रीमती उषा बेटी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कोरोना के बाद जब स्कूल की शुरुआत हुई, सभी बच्चे बहुत खुश थे। घर बैठे बैठे सभी लोग बोर हो चुके थे। क्लास रूम में बाजार की तरह शोर मच रहा था। सभी बातों में इतना व्यस्त थे कि उन्होंने ये जाना ही नहीं कि क्लास टीचर सामने आकर खड़ी है। “खामोश ! ये स्कूल है या मछली का बाजार। सब लोग अपनी अपनी सीट पर जाकर बैठो।” ऊँची आवाज में जब टीचर बोली तो पूरी क्लास एकदम चुप हो गई। टीचर ने पाठ लेना शुरू किया। मालती मैडम कक्षा 8 में अंग्रेजी पढ़ाती थी। वो बहुत स्ट्रिक्ट टीचर थी। पर बच्चों को वो बहुत प्यारी लगती थी। हर रोज क्लास खत्म होने से पहले टीचर एक नई कहानी सुनाती। कभी शेक्सपियर, कभी चार्ल्स डिकिन्स, कभी ओहेनरी। कहानी के अंत में वो हमेशा कहानी के बारे में एक अच्छी सीख भी बच्चों के साथ बाँटती। उस दिन मालती टीचर ने एकता के बारे में कहानी बनाई

और बच्चों से कहा, “बच्चों एकता में ही बल है। अगर साथ रहोगे तो आप बड़े बड़े सपने साकार कर सकते हो।”

अगले दिन टीचर आयी और हाजिरी ली। सभी बच्चे मौजूद थे, अवंतिका को छोड़कर। “अवंतिका क्यों नहीं आई आज, किसी को पता है?” टीचर ने पूछा। किसी को कोई खबर नहीं थी। अगले दो तीन दिन भी जब अवंतिका क्लास में नहीं आई तो टीचर खुद उसके घर चली गई पूछताछ करने के लिए। अचानक टीचर को घर में पाकर अवंतिका खुश थी पर वो वैसे ही बहुत दुखी थी। उसके पापा ने एक नई दुकान खोलने के लिए बैंक से लोन लिया था। उस लोन के पैसों से एक जमीन खरीदी और दुकान बनाने की सभी सामग्री भी खरीदी। लेकिन बीच में लॉक डाउन, कोरोना सब कुछ आ गया और उसे काम वहीं पर रोकना पड़ा। उसी बीच में उसको कोरोना की बीमारी भी लग गयी और अस्पताल में

भर्ती करवाना पड़ा। अस्पताल में एक भारी बिल भरना पड़ा। अब उनके पास न पैसा रहा न दुकान रही। और वो लॉन चुका नहीं पाए। अब बैंकवाले नीलामी की धमकी दे रहे हैं। घर में सबलोग बहुत परेशान थे। इसी लिए अवंतिका स्कूल नहीं आयी। अब स्कूल की फीस कौन देगा? किताबें कैसे खरीदेंगे? पापा बीच-बीच में आत्महत्या के बारे में भी कह रहे थे।

अवंतिका के बारे में सुनकर मालती टीचर की आँखों से आँसुओं की नदी बहने लगी। टीचर ने अवंतिका के सिर पर हाथ रखके बोला “बेटा, घबराओ नहीं। सब कुछ ठीक हो जाएगा। तुम जल्दी ही स्कूल वापस आओगेये मेरा वादा है।” मालती टीचर ने बैग से कुछ पैसे निकालकर अवंतिका की माँ को दिए और बोली “ये आप अपने पास रख लीजिए। कुछ काम आएंगे।”

अगले दिन जब मालती टीचर क्लास में आई तो उन्होंने पूरी क्लास को अवंतिका के बारे में बता दिया। और उनसे पूछा, “कहिए, अवंतिका के लिए हम क्या कर सकते हैं?”

तब दूसरी बेंच से सरिता ने उठकर कहा..... “अगर हम साथ रहेंगे तो हम

कर सकते हैं..... एकता में ही बल है।” टीचर के आँखों से अब खुशी के आँसू निकले.....।

टीचर ने एक पी. टी. मीटिंग बुलाई और ये विषय प्रस्तुत किया। सभी माँ बाप भी इसी लक्ष्य में जुड़ गए कि अवंतिका के प्रश्न का हल ढूँढना हैं। सभी बच्चों ने अपनी पॉकेट मनी इकट्ठा की। माता पिता ने अपने दफ्तरों में से भी कुछ पैसा इकट्ठा किया। फिर पी टी की रक्षा अधिकारी ने कुछ मजदूरों की सहायता से उस दुकान का निर्माण पूरा किया। बच्चों को भी उसमें शामिल किया। ये सब कुछ एक महीने में हुआ और अब अवंतिका के पिता की दुकान का इन्डोर्गेशन था। सभी बच्चे मिठाई बाँट रहे थे। अवंतिका का पूरा परिवार बहुत खुश था। बैंक वालों ने भी लॉन की अवधि बढ़ा दी थी। अगले दिन जब अवंतिका स्कूल आई तो सभी बच्चों ने नाच-गाने के साथ उसका स्वागत किया।

“मिलकर अगर हम बढ़ाएंगे कदम, हर मंजिल को जीत जाएंगे हम। एकता में ही बल है।”

हिंदी

मेरा अभिमान



सुश्री क्वीन मेरी जिजो
सुपुत्री श्री जीजो पॅल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हिंदी का तुम उत्थान करना,
हिंदी का तुम मान करना,
यह जननी है हर भाषा की, हिंदी पर तुम अभिमान करना,
जिस भाषा ने रिश्ते समझाएँ, जो हर भाषा को अपनाया,
हर बोली को अपने साथ लिये,
नम्रता का लिबास लिए,
जिस भाषा में पंत, निराला प्रेमचंद की लेखनी का ज्ञान हैं,
जिस भाषा में तुलसी, सूर, मीरा, जायसी के नाम हैं,
जिस हिंदी से हिंदुस्तान बना,
जिस हिंदी में इतिहास रचा,
जिस हिंदी को बचाने में यहाँ दशकों तक बवाल मचा,
यही हमारी वर्तनी हैं, यही हमारा व्याकरण
यही हमारी संस्कृति हैं, यही हमारा आचरण
हिंदी से पहचान हैं, हिंदी मेरी शान हैं,
हिंदी से हैं प्रेम मुझे, हिंदी पर है अभिमान ।

गणतंत्र दिवस

JAIN BOOK AGENCY



श्री वी. बीजू श्रीधर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हाल ही में हमने 75वां गणतंत्र दिवस मनाया। सबसे पहला सवाल जो मन में आता है वो ये है कि गणतंत्र दिवस का महत्व क्या है? स्वतंत्रता दिवस की तुलना में इसे इतने धूमधाम से क्यों मनाया जाता है?

15 अगस्त 1947 को भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया जब हमने दो शताब्दियों से अधिक समय तक बेड़ियों में रहने के बाद ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त की। स्वतंत्र होकर हमें अपने भाग्य का निर्णय करने की शक्ति प्राप्त थी, परंतु एक गौरवशाली राष्ट्र बनने का मार्ग भी हमें स्वयं बनाना था।

यह कार्य 9 दिसंबर 1946 को संविधान सभा के गठन के साथ शुरू हो गया था। महान पुरुषों और महिलाओं की इस प्रतिष्ठित सभा ने लगभग तीन वर्षों तक हमारे संविधान की रूपरेखा पर विस्तृत चर्चा की। इसके कार्यकाल के लगभग तीन वर्षों के दौरान इस संबंध में कई प्रस्ताव लाए गए, चर्चा की गई, संशोधन किया गया, हटाया गया और वापस लिया गया। अंततः संविधान सभा

ने 26 नवंबर 1949 को हमारे संविधान के मसौदे को अपनाया।

इसके तुरंत बाद, 26 जनवरी 1950 को, हमने इस संविधान को स्वयं को सौंपते हुए इसे अपनाया और अपने देश को एक गणतंत्र घोषित किया। उस दिन 21 तोपों की सलामी और डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराए जाने से भारतीय गणराज्य के ऐतिहासिक जन्म की शुरुआत हुई। इसके बाद, 26 जनवरी को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया गया और इसे भारत के गणतंत्र दिवस के रूप में मान्यता दी गई। हर साल, इस दिन मनाए जाने वाले समारोहों में शानदार सैन्य और सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए जाते हैं। नई दिल्ली में, सशस्त्र बल के जवान सैन्य शक्ति का विस्तृत प्रदर्शन करते हुए कर्तव्य पथ पर मार्च करते हैं।

यह सत्य है कि हमारा संविधान अपनी श्रेणी का सबसे लंबा लिखित दस्तावेज़ है। हमने संविधान को अपनाने

के साथ ही अपने देश को एक संप्रभु, लोकतांत्रिक और गणतंत्र राज्य घोषित किया। संविधान ने भारत के नागरिकों को अपनी सरकार चुनने की शक्ति दी और लोकतंत्र का मार्ग प्रशस्त किया। इसने हमें इस बात की व्यापक रूपरेखा दी कि हम अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा कैसे शासित होंगे। यह हमें मौलिक अधिकारों से सशक्त बनाता है और मौलिक कर्तव्यों से बाध्य करता है। शासन की सुविधा के लिए, संविधान द्वारा कई स्वतंत्र और स्वायत्त संस्थान बनाए गए थे, और भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक द्वारा संचालित भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा

विभाग, एक ऐसा कवच है जो हमारे राष्ट्र की रक्षा करता है।

उपरोक्त से, यह स्पष्ट है कि संविधान हमारे राष्ट्र का डिज़ाइन है, और इसलिए, इसे अपनाने के दिन को बहुत महत्व दिया गया है। हालाँकि, गणतंत्र दिवस हमारे लिए संवैधानिक मूल्यों और उसमें निहित नैतिकता को बनाए रखने की भी याद दिलाता है। आइए, हम सब मिलकर अपने राष्ट्र के संस्थापकों के इन पोषित मूल्यों को बनाए रखें।

**संविधान को
बनाने में 2
साल 11 महीने
और 18 दिन
का समय लगा
था।**

**इसे तैयार
करने में 284
मेंबर ने काम
किया था।**



भारत

सतरंगी बोली



विनय विनोद
सुपुत्र निषा जी पिळ्ळे
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंद में चलती है हिंदी की बोली
मीठी, अनोखी, सतरंगी सी बोली ।
कश्मीर से कन्याकुमारी को छूती
अरुणाचल और कच्छ के दिलों को जोड़ती
विविधता में एकता की मोतियां बुनती
मीठी, अनोखी सतरंगी सी बोली ।

संस्कृति और साहित्य से धन्य यह बोली
गौरव के वृत्तांत रचती महान शैली
देश के नसों में खून सा बहती
मीठी, अनोखी सतरंगी सी बोली ।
संस्कृत के वंश में पली यह न्यारी
अरबी फारसी एवं तुर्की से प्रभावित हुई
हिंदुस्तान के हृदय में अमृत वर्षाती
मीठी, अनोखी सतरंगी सी बोली ।



मैं कल करूंगी

सुश्री उणिमाया सी जे
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

4.00 ए एम

ट्रिंग...ट्रिंग....स्वाति ने बिना आंखें खोले ही अलार्म बंद कर दिया । आज मंगलवार है.... उसने मन ही मन सोचा । नित्या को केमिस्ट्री की ट्यूशन है और एलन को डांस क्लास जाना है । उसने जबरदस्ती अपनी आंखें खोल लीं ।

6.00 ए एम

विवेक के टहलने के लिए निकलने से पहले स्वाति ने उसके लिए ग्रीन टीन बनायी । उसने कूड़ेदानों को खाली किया, झाड़ू लगाई और फिर गेट से दूध उठाया ।

7.00 ए एम

एलन के लिए डोसा, नित्या के लिए रोटी और विवेक के लिए कॉफी बनाया ।

7.30 ए एम

स्वाति ने एलन की यूनिफार्म इस्त्री की । नित्या का बाल बनाया और लंच बॉक्स पैक किया । विवेक ने बच्चों को स्कूल छोड़ दिया ।

8.00 ए एम

विवेक के शर्ट पैंट निकालकर इस्त्री का सेट करके रख दिया । उसके लिए नाश्ते में ओट्स और दूध बनाकर उसे विदा कर दिया । फिर उसने गेट बंद कर दिया ।

9.00 ए एम

स्वाति ने एलन की प्लेट में बचा हुआ डोसा खा लिया और कॉफी पिया । दिन का सबसे व्यस्त हिस्सा खत्म हो गया है ।

9.15 ए एम

पौधों को पानी दिया । बिस्तर बनाया और शयन कक्ष की साफ-सफाई की, घर में झाड़ू-पोछा किया और किचन के झूठे बर्तन धो लिए ।

11.00 ए एम

फिर उसने लंच में चावल, सांभर तैयार किया और फिश फ्राई बनायी ।

1.00 पी एम

विवेक के लिए दोपहर का खाना परोसा । उसे विदा किया और किवाड बंद कर दिया ।

2.00 पी एम

स्वाति ने फिर से किचन साफ किया और कपडे धोने लग गयी ।

3.00 पी एम

सफेद कपडों को अलग किया, कुछ कपडों को हाथ से और कुछ मशीन में डाल दिए । सूखे कपडों को अलमारी में रख दिए ।

4.00 पी एम

चाय - समोसे बनाए । एलन और नित्या के स्कूल से लौटने पर उनको नहला धोकर चाय-समोसे खिला दिए ।

5.00 पी एम

स्वाति ने रात के लिए आटा गूंथ के रखा । आलू की सब्जी बनायी और बर्तन धोके रख दिए ।

6.00 पी एम

पूजा घर में दिए जलाए । रोटी बनायी ।

7.00 पी एम

एलन को होमवर्क करने में मदद की । नित्या के मैथमैटिक्स की शंकाएं दूर की । विवेक की गाडी हॉर्न बजायी तो जाकर गेट खोल दी । उसको चाय-समोसे परोसे ।

8.00 पी एम

सबने मिलकर डिनर खाया ।

9.00 पी एम

स्वाति ने पूरे झूठे बर्तन साफ किए । किचन की सफाई की ।

10.00 पी एम

अगले दिन सुबह के नाश्ते के लिए सामान इकट्ठा करके रख दिया ।

11.00 पी एम

विवेक: तुमने आज बेड शीट बदला नहीं ? सारा दिन घर में बेकार बैठती रहती हो न ? अब मुझे यह भी करना पड़ेगा ?

स्वाति ने कहा: **‘कल करूंगी.’**

‘सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपी आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है’ ।

जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

मैं नीलूपमा हूँ



श्रीमती के एन बिन्दु
पर्यवेक्षक

अब भी मुझे याद है कि बहुत साल पहले, बचपन में, मैं अपनी दादी के साथ गाँव के नागवन (नागों की पवित्र वन) में आया करता था। हम यहाँ आकर दिया जलाकर प्रार्थना में विलीन होते थे। उस वक्त हमारे साथ और कई दोस्त और बच्चे भी होते थे। हम सब इस परंपरागत रूढ़ि को बहुत पसंद करते थे। इसलिए संध्या वंदन (गोधूलि) में भी हम भाग लेते थे। दादी जी इस पवित्र वन के बारे में और इस जगह में रहनेवाले कई तरह के सांपों के बारे में बड़ी श्रद्धा के साथ कहानियाँ सुनाया करती थी। दादी बीच में यह याद दिलाती थी कि "यहाँ ऊँचे स्वर में मत बोलना – क्योंकि ऊँची आवाज नाग देवताओं को पसंद नहीं" दादी यह भी बताकर हमें डराती थी कि - अगर ऐसे करने से नाग देवता हमें श्राप देते हैं। कभी-कभी हम वहाँ से भागकर नागवन के उत्तरी दिशा में स्थित तालाब के किनारे

जाकर सीढ़ियों में बैठकर मछलियों को देखते थे और मौज-मस्ती करते थे। सबसे आकर्षक बात यह थी कि शाम होते ही चिड़ियाँ अपने घरों में लौट आती थी और उनके चहचहाने से चारों ओर मुखरित होता था। कुछ चिड़िया चहचहाती थी तो कुछ खामोश होकर हमारी तरफ देखती थी तो कुछ चोंचों से पंखों को साफ करने में व्यस्त थी। ये सब नजारे पवित्र वन की सुंदरता पर चार चांद लगाते थे। यहाँ बाँस, बरगद, चम्बा और पलाश जैसे अनेक पेड़ भी थे। शाम होते ही अंधकार छा जाता था, वहाँ अकेले जाने से डर लगता था। दादी को कोई डर नहीं था और वे रोज़ वहाँ जाकर दिया जलाती थी। उनका कहना था कि नाग देवता उनका ख्याल रखेंगे। हालांकि सूरज की रोशनी पूरी तरह पवित्र वन में पहुंच नहीं पाती थी। मैं धीरे-धीरे नागवन की ओर चला, जहाँ मेरी दादी

दीप जलाया करती थी। अचानक मैंने देखा कि एक लड़की चम्बा पेड के नीचे खड़ी है, चमकती आँखें और मनमोहक मुस्कान के साथ मुझे निहार रही है। एक पल के लिए मैं स्तब्ध रह गया और उस चेहरे को याद करने की कोशिश की। यह चेहरा देखा-देखा सा लग रहा था, यह चमकती आँखें मेरे अंतर्मन में कहीं है। उस मुस्कान ने मेरी स्मृति में एक हलचल पैदा कर दी थी। कौन है वो? वह यहाँ क्यों आयी है? मेरे मन में एक साथ हज़ारों प्रश्न उठे और मैंने बिना कुछ सोचे उनसे पूछ ही लिया 'आप कौन है?' कुछ क्षण के बाद वह धीमी लेकिन मधुर स्वर में बोली 'मैं "नीलूपमा"।

कौन नीलूपमा...? मुझे समझ नहीं आया कि आप कौन हैं, कहाँ से हैं? आपको यहाँ कभी देखा भी नहीं है। एक ही सांस में इतने सवाल पूछे। अथर्व का रवैया देखकर वह एक पल के लिए चुप हो गयी। उसके मन में सबके प्रति कितना प्यार और सम्मान था अब वह ऐसे क्यों हो गए हैं? नीलूपमा यादों में खो गयी।

वह कॉलेज का अंतिम दिन था। एक ऐसा दिन जब सभी बच्चे एक साथ जश्न मनाते हैं। जो लोग अच्छे दोस्त बनकर अलग हो जाते हैं, वे कहते हैं कि फिर मिलेंगे। सब छात्र-छात्राएं अपनी बातों में मग्न खड़े थे, तभी मिथुन नाम का एक छात्र अपनी नई बाइक लेकर आया।

हर कोई उसकी बाइक के पास खड़े हो गए और अपनी-अपनी टिप्पणी देने लगे। एक-एक करके उन लड़कों ने उस नई बाइक पर राउण्ड मारना शुरू कर दिया। अथर्व अपनी बारी का इंतजार किया और बाइक मिलते ही उस पर सवार हो गया। बहुत तेज़ी से चारों ओर राउण्ड मारने लगा। अचानक बाइक का नियंत्रण खो गया और दोस्तों की झुण्ड में घुस गयी। हडकंप मच गया और उसने देखा तो उसकी एक दोस्त खून से लथपथ पड़ी हुई है। अथर्व बेहोश हो गया जब उसे होश आया तो उसे एहसास हुआ कि वह अस्पताल में है। अब भी वह सोचने-समझने की स्थिति में नहीं था कि उसके दोस्त के साथ क्या हुआ था? बाइक चलाकर मैं ने बहुत बड़ी गलती की, वह अपने आप को कोसने लगा। वह अंदर ही अंदर घुटने लगा और मौन हो गया। अपने पछतावे के कारण खामोश जीवन बिताने लगा जिन्दा लाश की तरह।

एक पल के लिए शांत खड़ी रही और जोर से हँसते हुए नीलूपमा ने पूछा....."बिट्टु क्या हुआ है आपको? अथर्व स्तब्ध रह गया। क्योंकि उसने उसे बिट्टु बुलाया वह नाम जो सिर्फ उसकी दादी और कुछ करीबी रिश्तेदार ही जानते हैं वह इसको पता कैसे हो सकता है। वह असमंजस में पड़ गया। 'इतना सोच क्यों रहे हो.... ज़रा याद करके देखो वह कॉलेज के दिन.... बीते हुए पल..... इस सदमे से

थोड़ी राहत मिल जाएगी आपको!!!
केमिस्ट्री के क्लास, लैब और वह गुलमोहर
का पेड क्या आप को कुछ भी
याद नहीं ! याद है मकखन लाल सर को
हम कैसे मखना ओ मखना करके बुलाते थे
.... और इसके लिए बहुत मार भी खाई थी
हम लोगों ने.... कुछ तो याद करो । वह
कितनी सहजता से कॉलेज जीवन और
पिछली बातों के बारे में बताती जा रही है
.....। अथर्व को भी वह सब बातें याद
आने लगी । अचानक उस लडकी ने पूछा
‘क्या आप नीहारा को भी भूल गए
.....आपकी बेस्ट फ्रेंड ? यह नाम सुनते ही
अथर्व नीचे जमीन पर बैठ गया और
हैरान होकर बड़-बड़ाने लगा..मेरी नी...
... हा....रा.....।

नीलूपमा जल्दी से अथर्व के पास
आयी और धीमी आवाज से उसका नाम
लिया... वह अपने आप को संभाला और
उसे समझ में नहीं आ रहा था यह क्या हो
रहा है । उन्होंने अपने कॉलेज लाइफ को
याद करने की कोशिश की । कॉलेज के
सभी दोस्त उनको याद आने लगा ।
नीहारा किसी राज घराने से थी लेकिन
उसको इस बात का कोई गर्व नहीं था,
वह सभी के प्रति सौम्य और सहानुभूति
रखने वाली थी और दिखने में बहुत सुंदर
थी । उतने प्रिय मित्र के साथ उसकी वजह
से जो घटना घटी, उसके दुःख का कारण
बना यह सोचकर उसका मानसिक संतुलन
बिगड़ गया था, उसको यह एहसास भी

उस घटना के बाद हुआ था कि वह उसके
लिए कितनी प्रिय थी । उस घटना से
उसका मन घायल हो गया था । उससे दूर
भाग गया था । अचानक अपने विचारों से
मुक्त होकर उसने अपना चेहरा नीलूपमा
की ओर उठाया और ध्यान से उसे देखा ।
उसने मुस्कुराते हुए पूछा, 'तुम्हें अभी भी
शक है, मैं कौन हूं ?

लेकिन फिलहाल यह शक दूर करने
का समय नहीं है...अब मैं अपना वादा पूरा
करने के लिए आपके पास आयी हूँ । तुम्हें
मेरे साथ आना होगा । प्लीज मना मत
कीजिएआप को मेरे साथ आना ही
होगा..... मैं एक ऐसे शख्स को जानती हूँ
जो आपसे बहुत प्यार करती है और
आपका बड़ा सम्मान करती है । यह
सुनकर अथर्व ने कहा - क्या तुम जानती
हो मेरे हृदय में एक अधूरा दुःख है जिससे
मुझे कभी छुटकारा नहीं मिलेगी ?
नीलूपमा बोल उठी ‘मैं सब जानती हूँ और
आप किस हाल से गुजर रहे हैं वह भी पता
है मुझे । न जाने मुझे क्यों उसकी बातों पर
यकीन होता जा रहा था । मैंने उसके साथ
जाने के लिए मन बनाया और नीलूपमा के
साथ कार में बैठ गया और आधे घंटे में
हम एक पुरानी हवेली में पहुंच गए ।
नीलूपमा ने कार रोकी और कहा पहुंच गए
हम । हम कार से बाहर निकले और वह
आगे और मैं पीछे चलने लगे । हम एक
सुंदर नक्शीदार दरवाजे के पास पहुँचे ।
दरवाज़ा अधखुला था । उसने मुझे लिविंग
रूम में बिठाया और कहा कि वह अभी
आएगी । वह अंदर चली गयी, मैं बैठकर
उस हॉल की आलीशान पेंटिंग देखने

लगा। हवेली की वर्तमान स्थिति दयनीय लग रही थी। अचानक दरवाज़ा खुला एक बहुत ही कुलीन और सुंदर महिला ब्हीलचेयर में नजर आयी।

मुझे अपनी आंखों पर यकीन नहीं हो रहा था। क्या यह मेरी पुरानी दोस्त नीहारा ही है न? अनजाने में मेरे कदम धीरे-धीरे आगे बढ़े लेकिन उतनी ही तेज़ी से पीछे भी। चार आँखें एक-दूसरे के साथ बीते समय की बहुत सारी कहानियाँ बतायीं। मेरे मन में उत्साह और खुशी थी। मैं यह नहीं बता पा रहा था कि यह हकीकत है या सपना। अंततः नीहारा ने ही खामोशी तोड़ी और कहा- बिट्टु तुम कैसे हो? परिवार, बच्चे न जाने कई सवाल एक साथ पूछने लगी। मैंने मन ही मन कहा नीहारा तुम तो बिल्कुल ही नहीं बदली, पहले भी एक सांस में हजार सवाल पूछती थी। तभी मुझे स्थिति का आभास हुआ। 'मैं अपनी कहानी बाद में सुनाता हूँ, पहले तुम मुझे अपनी कहानी सुना दो।' थोड़ी देर के सन्नाटे के बाद वह बताने लगी। परिवार के मान को बनाए रखने के लिए मेरे बुजुर्ग माता-पिता ने अधेड़ आदमी के साथ मेरी शादी तय की थी। दुल्हे को केवल मेरी संपत्ति में दिलचस्पी थी। मानसिक और शारीरिक रूप से हम दोनों बहुत अलग थे। मैंने अपनी बेटी के लिए सब कुछ सहा।

फिर एक दिन वह हमें छोड़कर चले गए। मेरे रिश्तेदार फिर से शादी करने के लिए जोर देने लगे। लेकिन मैं अपनी पहली शादी के अनुभव के बाद दूसरी शादी के बारे में सोच भी नहीं पा रही थी और धीरे-धीरे मेरी मानसिक थकान का असर मेरे शरीर पर भी पड़ने लगा। अब मैं ब्हीलचेयर के सहारे अपना जीवन व्यतीत कर रही हूँ। जब हम बात कर रहे थे, तो नीलूपमा मेज पर जन्मदिन का केक और मोमबत्तियाँ लेकर आई। नीहारा ने कहा 'आज मेरा जन्मदिन है और मैं बहुत खुश हूँ कि आज के दिन मुझे बिट्टु से मिलने का मौका मिला। नीहारा को केक के पास बिठाने के बाद नीलूपमा ने अथर्व को भी बुलाया और कहा कि यह केक आप दोनों मिलकर काटें...सालों बाद अपनी टूटी हुई दोस्ती आज से फिर से शुरू करें...!!! कई सालों के बाद हम पूरे दिन खुशी से बैठे कहानियाँ सुनाते रहे और प्यार बाँटते रहे। अथर्व से और रहा नहीं जा सका उसके मन की दुविधा दूर करने के लिए उसने पूछ ही लिया.....यह लड़की ..? सौम्य मुस्कान से उसने कहा, "मैं नीलूपमा हूँ..." इस माँ की बेटी.... तीनों एक साथ हंस पड़े। इस मुलाकात की रंगीन यादें मन में समेटे हुए अथर्व ने उनसे अलविदा कहा.....

एक दोस्त



श्री वी. आर. राजीव
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

है सफर अगर ये जीवन तो
हमसफ़र कोई तो बनता है ।
है जीवन संग्राम अगर तो
एक जंग सभी का बनता है ।

राहों में जहां धूप ही है बस
छाँव भी कभी तो बनता है ।
माना मुश्किल है राह मगर
मुस्कान कभी तो बनता है ।

नींद तुम्हें कभी जो आएगी
फिर ख्वाब एक तो बनता है ।
माना दुश्मन है दुनिया यह मगर
एक दोस्त सभी का बनता है
एक दोस्त सभी का बनता है ।



ये जरूरी तो नहीं



श्री के अनिल
सहायक पर्यवेक्षक

जमीन आसमान को चाहे,
और वो उसे मिल ही जाए,
ये जरूरी तो नहीं.....।

दुनियाँ के गतिमान चक्र में, होता है रोज बहुत कुछ,
पर जो हो रहा है वो सब सही ही हो,
ये जरूरी तो नहीं.....।

अनजानों की भीड़ भरे शहर में,
कोई अपना भी कभी मिल ही जाए,
ये जरूरी तो नहीं.....।

ख्वाब देखने से शुरू करता है इंसान जीवन अपना,
मौत के आगोश में जाने से पहले वो सब पूरे हो जाए,
ये जरूरी तो नहीं.....।

अगर जरूरतों के आगे कमाई कम हो तो,
खुदारी को ही गिरवी रख कर जिया जाए,
ये जरूरी तो नहीं.....।

कहते हैं इंसान अपना पहला प्यार कभी नहीं भूलता,
पर पहली बार में ही सबको अच्छा इंसान मिल जाए,
ये जरूरी तो नहीं.....।

एक दौर बचपन का



श्री गोपेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक दौर बचपन का,
जहां फिरते थे मन चंचलताओं में बहुत
जेबें खाली होती थीं पर जरूरत ना थी पैसों की
लम्हे जो इकठ्ठे किया करते थे,
उनका ही प्रमाण थी हमारी खुशी
कभी कच्चे मकानों के पक्के सपनों में,
कभी मेलों में, कभी लड़कपन के खेलों में
दादू की डांट में तो कभी दादी के दुलार में
कभी तैर लेते थे बारिश के पानी के बहाव में
बस यूं ही खो जाते बचपन के सफर में
कभी इस गली कभी उस गली
कभी छांव पेड़ों की, कभी दौड़ पगडंडियों की
कभी सरपट नहरों की तो कभी बजाते घंटियां मंदिरों की
खाना पीना भूल कर वो दिन रातें गुम हो जाती खेलों में,
आती मां ढूंढने गलियों में, छड़ियां लेकर हाथों में
अंधेरों में छलांग लगा हम बढ जाते घरों की ओर
मां की मार नहीं पर पापा की नजरें डराती बहुत
बच भी लेते शाम की मार से, रोना धोना करके बहुत
मां के आंचल की वो छाया, मां लाड़ लडाती भी बहुत
मां के आंचल में सिमट के नींद भी गहरी आती बहुत
ना तोलते सपनों को पैसों से, चवन्नियों में खुश हो जाते बहुत
एक दौर बचपन की यादों का
चंचलताओं की स्मृतियों से भरा बहुत।

बरसात की रातें



सुश्री ए एन देविका,
सुपुत्री श्री जी सी नारायणन पोटी,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

बरसात की रातें, जब बादल छाये,
मन को भर लेती हैं, खुशियां लहराये ।
बूंदों की बरसात संग गीत बजाती,
मन को मोह लेती हैं ये रातें सुंदरता बिखराती ।

गरजते बादल और बारिश की बूंदों की आवाज,
हर दिल को आकर्षित करती एक साज ।
धरती की गोद में बैठे हुए है सब,
बरसात की रातें जैसे प्रभु का एक अद्भुत सबब

सफर



सुश्री अंजना ए
सुपुत्री के अनिल, सहायक पर्यवेक्षक

इस धरती पर हम और आप हैं,
कई उम्मीदों को निभाने को ।

रात वर्षों के अपने सफर को,
सफल - सुफल बनाने को ।

धर्म पथ पर चलते - चलते,
राह में सबके साथ मिलते - जुलते ।

आगे कदम बढ़ाने को,
जीवन को आनंदमय बनाने को ।

न कभी गिरना, नहीं है बड़ी बात,
गिरकर उठना ही है बड़ी बात ।

बीता हुआ पल हमारा नहीं,
कल क्या हो, ये अंदाज़ा नहीं ।

लेकिन अभी तो ये पल हमारा है,
बस अब जीवन का फ़र्ज़ निभाना है ।

अनुमति - एक महिला के जीवन से अंत तक



सुश्री जे आर मालविका
सुपुत्री राखी पी ओ, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रिय समाज, दो प्रश्न- यदि आपका बेटा 21 साल का है और अकेले गाड़ी चला कर किसी दूर स्थान पर जा रहा है, तो क्या आप मना करेंगे ? और अगर आपकी 25 साल की बेटी भी यह करना चाहेगी तो क्या आप हाँ कहेंगे ?

कृपया जवाब देने से पहले सोचें कि ऐसा क्यों हो रहा है !?

क्या महिलाएँ भी पुरुषों की तरह आजाद पैदा नहीं होती ? उनकी स्वतंत्रता को पिता या पति की मंजूरी की आवश्यकता क्यों है ? जब तक उनकी शादी नहीं हो जाती, तब तक उनका जीवन उनके परिवार के “क्या करें” और “क्या न करें” के अनुसार होता है, उसके बाद यह उनके पति और ससुराल वालों का हो जाता है। एक अच्छा पालन-पोषण

तब होता है जब आप अपनी बेटियों को अच्छी किशोरावस्था से गुजरने के लिए मार्गदर्शन करें और किशोरावस्था के बाद हर किसी का निजी जीवन होता है।

युवावस्था प्राप्त करने के बाद भी उन्हें नियंत्रित करना और उनके हितों में पाबंदी डालना सही नहीं है। जिस तरह माता- पिता अपने काम खुद करते हैं और विभिन्न चीजों में विश्वास रखते हैं, उसी तरह बेटियों के भी जीवन के प्रति अपनी राय और विचार होते हैं। यह कितना शर्मनाक है कि उन्हें अपने जीवन के लिए आपसे अनुमति माँगनी पड़ती है।

आपको बस यह सुनिश्चित करना है कि वे खुद को या दूसरों को नुकसान नहीं पहुंचा रही हैं। हर व्यक्ति की तरह बेटियों की भी अपनी इच्छा होती है, “यह मत

करो, तुम एक लड़की हो” जैसे बयानों के बिना उन्हें अपना जीवन जीने दें।

पुरुषों की तरह एक महिला को भी यह सुनिश्चित करने का अधिकार है कि उन्हें क्या करना है, कहाँ जाना है, कब शादी करनी है, किससे शादी करनी है, किस पर विश्वास करना है और किस पर ध्यान नहीं देना है।

सिर्फ इसलिए कि आपने उन्हें जन्म दिया और बड़ा किया, इसका यह मतलब नहीं कि लड़कियों को आपके विश्वासों की कार्बन-कापी बननी होगी। वे किसी की भी तरह एक और व्यक्ति है उनका पृथक व्यक्तित्व है। वे धार्मिक मतभेदों से नफरत कर सकते हैं भले ही माता-पिता धार्मिक हों, यह पूरी तरह से उनकी पसंद है। माता-पिता यात्रा से नफरत करते हैं इसका मतलब यह नहीं कि उन्हें भी इससे नफरत करनी होगी।

इसी तरह हर बेटी एक ऐसी इंसान होती है जिसके अपने बहुत से सपने होते हैं और वे अभी भी उस दिन का

सपना देख रही हैं जब उनके माता-पिता उनसे कहेंगे “अपना जीवन जियो, यह तुम्हारा है, हर चीज के लिए हमारी अनुमति मत माँगो, हमारे लिए तुम सबकुछ हो, तुम अब बड़ी हो गई हो और अपने दम पर कुछ भी कर सकती हो।”

अगर आप यह कह रहे हैं कि लड़कियाँ असुरक्षित हैं, इसलिए उन्हें हर बात के लिए “न” सुननी पड़ती है, तो प्रिय समाज आप गलत हैं। इसके बजाय आपको उन्हें आत्मरक्षा करना सिखाना चाहिए और उन्हें अपनी जिंदगी जीने का आत्मविश्वास देना होगा, अपना जीवनसाथी चुनने का अधिकार देना होगा। अगर वह कहती है नहीं, तो वह “नहीं” माना जाए, आप इसे बदल नहीं सकते।

महिलाओं को अपने जीवन के बारे में निडर होकर बोलने दें, कृपया परिवर्तन लाएं प्रिय समाज। यह महिलाएँ नहीं हैं जिन्हें डरना है और नियंत्रित होना है, बल्कि यह समाज है जिसे महिलाओं को एक व्यक्ति के रूप में स्वीकार करना है।



वृद्धाश्रम

श्रीमती नीनु एम डी,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

भारत देश में वृद्धाश्रम तथा उनमें रहने वाले बुजुर्गों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। भारत की संस्कृति में सदैव बड़ों को सम्मान दिया गया है। हमारी संस्कृति यह सिखाती हैं कि बड़ों की इज्जत करे उनका कहना माने। अपने बुजुर्ग सदस्यों की देखभाल करना हमारे सामाजिक मूल्यों और मानवता का प्रतिबिंब है। उन्होंने अपना पूरा जीवन हमारे परिवारों और समुदायों के लिए योगदान देते हुए, अक्सर हमारी भलाई के लिए बलिदान देते हुए बिताया है। उनके अंतिम वर्षों में उनकी देखभाल करना और उनका सम्मान करना उनके प्रयासों को स्वीकार करने और यह सुनिश्चित करने का एक तरीका है कि वे हमेशा सम्मान, आराम और प्रेम के साथ रहें। इसके अलावा, बुजुर्ग सदस्य ज्ञान और अनुभव के भंडार हैं, और उनकी देखभाल करके, हम इस अमूल्य खजाने को सुरक्षित और संजोकर रख सकते हैं।

आज कल मनुष्य इतना भौतिकवादी हो गया है कि वे केवल भौतिक सुखों की कामना करता रहता है। इन भौतिक सुखों की उपस्थिति में अपने बीबी-बच्चों के साथ दिन गुजर बसर करना चाहता है। ऐसा नहीं है कि वे अपने माता-पिता की देखभाल नहीं कर सकते। उनके सोचने की शक्ति संकीर्ण हो गई है। वह अपने इन्हीं भौतिक सुखों के आगे अपने माता-पिता को रोड़ा समझने लगते हैं।

वृद्धाश्रम नई संस्कृति का प्रतीक हैं। शहरीकरण, आधुनिकीकरण और कई अन्य कारकों के कारण संयुक्त परिवार विघटित हो गये हैं। लोग अपनी नौकरियों में व्यस्त हैं, और उनके पास परिवार के बुजुर्ग सदस्यों की देखभाल के लिए कोई समय नहीं है। इसलिए वे अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ देते हैं। मनुष्य के जीवन में शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और वृद्धावस्था सहित विभिन्न अवस्थाएँ होती हैं। हम सभी को इन युगों में आना और यात्रा करनी चाहिए। हालाँकि, हमारे व्यवहार, दृष्टिकोण, स्वभाव और शारीरिक फिटनेस हर चरण में भिन्न होते हैं। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे एक परिवार में, समाज में अपने दोस्तों के साथ रहने की ज़रूरत है।

मातृभूमि



कृष्णकला पी आर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जन्मी जिसकी गोद में मैं,
शान उसकी अगण्य है,
नाम बड़ा ही रौनक है।

जन्मी जिसकी गोद में मैं,
है शीष में इसकी हिमवान
मुकुट,
हरियाली प्रशस्त भूमि यह,
खुशहाल यहाँ हर जीवन है।

जन्मी जिसकी गोद में मैं,
पाँव को सींचे जिसकी
सागर,
सींचे उसे कई लहर नहर,
पंछी बसे कई डगर डगर।

जन्मी जिसकी गोद में मैं,
रंगी बिरंगी फूलों से रंगी,
नई पुरानी कई रीतों से
सज्जी।

जन्मी जिसकी गोद में मैं,
है गहरी संस्कार से भरी,
छिपी है इसकी पृष्ठों में कई,
रहस्य कहानियाँ अनेक,

जिसकी तलाश में आए
अनगिनत प्रभावी।

जन्मी जिसकी गोद में मैं,
है शान उसकी निराली,
तोड़ डाला उसने हर बंदिश
को,
जकड़ न सकी कोई भी
शक्ति,
उसे अपनी आज़ादी पाने से।

जन्मी जिसकी गोद में मैं,
विश्वभर में देन है उसकी,
कोने कोने में जा बसी,
इसकी छोटी मोती टोली,
छू लिया है इसके सपूतों ने,
आसमान की ऊंचाई व
समंदर की गहराई को।

जन्मी जिसकी गोद में मैं,
सिखाया उसने मुझे रहना,
मिल झुल संग सबके साथ,
न कोई बैर, न कोई
कुटिलता,
न कोई धर्म, न कोई
मजहब,

करती हमे अलग अलग।

जन्मी जिसकी गोद में मैं,
है हर तरह से नीराली वह,
मनाया हमने हर खुशी संग
संग,
फिर चाहे हो-होली, होली,
ईद या क्रिसमस,
ऐसी खुशहाल धरा है मेरी,
जिसकी परिभाषा है
"वसुधैव कुटुम्बकम्"।

जन्मी जिसकी गोद में मैं,
है शत शत नमन उसको
मेरा,
आशा न कर किसी भी जन्म
में,
सुपुत मैं किसी और की बनूँ,
ऐसी निराली मातृभूमि
मेरी,
जिसकी तुलना किसी से
नहीं।

ऐ माँ.... तू है सदैव महान।

मन के हारे हार है मन के जीते जीत



श्री योगेंद्र सिंह
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

“प्रफुल्ल बिल्लोरे”: एक युवा उद्यमी

आज हम बात करेंगे श्री नरेंद्र मोदी जी के बाद देश के दूसरे सबसे मशहूर चाय वाले 'प्रफुल्ल बिल्लोरे' की जिन्हें लोग 'MBA चाय वाला' के नाम से भी जानते हैं।

2014, यह वह वर्ष है जिसे आप शायद लोकसभा चुनाव और सत्ता परिवर्तन के लिए याद करते हों। पर इसी साल भारत का भावी अरबपति अहमदाबाद में आपने सफर की शुरुआत कर चुका था। MBA में दाखिला पाने की ख्वाहिश से लेकर, MBA चाय वाला को एक ब्रांड बनाने तक, चाय वाला कहकर चिढ़ाए जाने से लेकर लाखों युवाओं की प्रेरणा बनने तक, प्रफुल्ल बिल्लोरे की ज़िन्दगी अपने आप में पूरी कहानी है, सपनों की, संघर्षों की और सफलता की।

वर्ष 2014 अहमदाबाद :- 'प्रफुल्ल' नाम का एक साधारण सा लड़का अपने साधारण से सपनों के साथ एमबीए एंट्रन्स परीक्षा की तैयारी में लगा

हुआ था। हर ग्रेजुएट लड़के की तरह प्रफुल्ल का सपना भी किसी बड़े से एमबीए कॉलेज में दाखिला लेकर एक ठीक-ठाक सी तनख्वाह और एक सामान्य सी जीवन शैली हासिल करना था। पर नियति को कुछ और ही मंजूर था। तो बस यही से शुरू हो चुकी थी प्रफुल्ल बिल्लोरे की एमबीए चाय वाला बनने की कहानी।

उन दिनों प्रफुल्ल दिन में 8-10 घंटे पढ़ाई में ही लिप्त होता, साथ होता तो बस किताबों का, कुछ सवाल जवाब और एक प्याली चाय की। जो था बस यही था। न कोई दोस्त ना ही परिवार और यही सब बस प्रफुल्ल की पूरी दुनिया बन चुके थे। लगातार तीन साल मेहनत और दो असफल कोशिशें, इसी के साथ हज़ारों चाय की प्यालियाँ। अब प्रफुल्ल पूरी तरह से टूट चुका था। तीन साल की मेहनत और प्रफुल्ल किसी भी मुकाम पर नहीं पहुँच पाया। उस वक़्त प्रफुल्ल ने अपने कमरे का दरवाज़ा बंद किया और पूरा दिन-पूरी रात सोता रहा, इसी तरह अगले दो हफ्ते निकल गए। प्रफुल्ल को कोई अंदाज़ा नहीं था कि वह आगे ज़िन्दगी में क्या करेगा।

जब आप लगातार तीन सालों तक किसी चीज़ को पाने की कोशिश करें और वह आपको ना मिले तब आप ऐसा महसूस करते हैं जैसा कुछ बचा ही नहीं और सब कुछ खत्म हो चुका है परंतु ये जीवन का अंत नहीं होता यही तो वक्त होता है खुद को जानने का और सोचने का कि आगे हम क्या कर सकते हैं।

उस वक्त प्रफुल्ल ने भी यही किया। प्रफुल्ल ने अपने पिताजी से कहा कि अब वह ज़िन्दगी में कभी किताबों को हाथ नहीं लगाएगा और प्रफुल्ल निकल पड़ा एक सफर पर, एक सफर खुद की तलाश में। शुरुआत बेंगलुरु से, फिर उसके बाद दिल्ली, मुंबई, गुरुग्राम। आखिर प्रफुल्ल को जिस शहर में आराम मिला वो था अहमदाबाद। अब प्रफुल्ल के मन ने प्रफुल्ल से सवाल पूछा कि कब तक वह यँ ही घूमेगा, ज़िन्दगी में आखिर कुछ करना भी है कि नहीं?

इस सफर के दरमियान प्रफुल्ल ने कई अरबपतियों की काहानियाँ पढ़ी, उनमें से अधिकतर अरबपतियों ने अपने जीवन में McDonald's में वेटर का काम किया था। प्रफुल्ल ने भी यही काम करने की सोची और McDonald's में वेटर की नौकरी की जहाँ उसे 37 रुपया प्रति घंटा मिलता था। यहाँ प्रफुल्ल सीख रहा था, काम को जान रहा था। यह पूर्णतः एक नया अनुभव था प्रफुल्ल के लिए, अनुभव CAT की पढ़ाई से लेकर Burger बनाने तक का। इसी तरह प्रफुल्ल काम करता रहा लेकिन एक दिन आया जब प्रफुल्ल ने खुद से सवाल पूछा कि आखिर कब तक वह ऐसी बिना पहचान की ज़िन्दगी जियेगा। लोग प्रफुल्ल को आवाज़ लगाकर Burger का Order तो दे रहे थे पर प्रफुल्ल की खुद की कोई पहचान नहीं थी। अब प्रफुल्ल जान चुका था कि उसे अपनी पहचान बनानी होगी। शुरुआत में प्रफुल्ल ने खुद का

Burger stall खोलने की सोची पर प्रफुल्ल किसी ऐसी चीज़ की तलाश में था जो पूरे देश को जोड़ती हो, जो सुबह दोपहर शाम हर वक्त हो जाये और ऐसी एक ही चीज़ थी वह है चाय।

जिस वक्त प्रफुल्ल ने चाय की दुकान खोलने की सोची उस वक्त प्रफुल्ल के सामने एक बर्तन की दुकान थी पर फिर भी प्रफुल्ल को चाय बनाने का समान खरीदने का साहस जुटाने में 45 दिन लग गए। अब वक्त आ चुका था कि प्रफुल्ल अपने चाय का ठेला खोले पर पैसे कहाँ से आएंगे? ये सवाल बरकरार था। प्रफुल्ल ने अपने पिताजी से झूठ कहा कि उसे एक इंटरनेशनल कोर्स करने के लिए 15000 रुपये की आवश्यकता है और इन्हीं पैसों से प्रफुल्ल ने अपना पहला चाय का ठेला खोला।

पहले दिन प्रफुल्ल के पास कोई ग्राहक नहीं आया। प्रफुल्ल जानता था कि जब तक वह अपनी मदद खुद नहीं करेगा कोई उसकी मदद नहीं करेगा। प्रफुल्ल खुद ही लोगों के पास अपनी चाय लेकर जाया करता और कहता कि “Hi I've Started My Chai Ki Dukaan, Would You Like To Taste It” लोग हैरान होते कि अंग्रेज़ी बोलने वाला चाय वाला आखिर है कौन? दूसरे दिन प्रफुल्ल ने 150 रुपये कमाए, तीसरे दिन 300 और अगले दिन 600 और इस तरह धीरे-धीरे लोगों की उत्सुकता प्रफुल्ल के बारे में बढ़ती गयी, लोग प्रफुल्ल के बारे में जानना चाहते थे। लोग जान चुके थे कि यह चाय वाला कोई साधारण चाय वाला नहीं है।

इसी तरह 3000, 4000, 5000 करते-करते प्रफुल्ल का बिज़नेस चल पड़ा। इसी वक्त प्रफुल्ल को अपने पिताजी का फ़ोन आया उन्होंने पूछा कि बेटा आप एमबीए करने वाले थे उसका क्या हुआ? अपने पिताजी की इच्छा पूरी करने के

लिए प्रफुल्ल ने एक लोकल एमबीए कॉलेज में दाखिला लिया। पर प्रफुल्ल का मन उस कॉलेज में नहीं लगा। इस वक़्त प्रफुल्ल ने सोचा कि क्यों ना वह अपने चाय की दुकान को पूरे दिन चलाये, प्रफुल्ल ने खुद से कहा "No MBA, Only Chai" और इसी विचार के साथ कॉलेज के सातवें दिन ही प्रफुल्ल ने कॉलेज छोड़ दिया।

पर प्रफुल्ल अपनी ज़िन्दगी में आने वाली अगली चुनौतियों से अनजान था। लोग प्रफुल्ल की दुकान से जलने लगे और उन्होंने ज़बरदस्ती प्रफुल्ल की दुकान हटा दी। मात्र दो महीनों में ही प्रफुल्ल का चाय का धंधा बंद हो चुका था। अब की बार प्रफुल्ल ने अपने चाय का ठेला इस तरीके से लगाया कि कोई उसे हटा न सके। प्रफुल्ल ने एक डॉक्टर से बात की और उसके हॉस्पिटल के आगे अपना ठेला लगाया। इसके बदले प्रफुल्ल उस डॉक्टर को 10000 रुपये महीना देता था।

प्रफुल्ल ने अपनी दुकान से ही सामाजिक सेवा शुरू की। प्रफुल्ल ने अपनी दुकान पर एक बोर्ड लगाया और उसपर लिखा कि यदि किसी को जॉब चाहिए तो वह अपना नाम यहाँ लिख दे। जब उसे किसी काम वाले की ज़रूरत होती तो वह उस बोर्ड पर लिखे नंबर पर संपर्क करता। इसी तरह प्रफुल्ल की दुकान की बदौलत कई लोगों को जॉब मिली तो कुछ लोगों की शादियाँ भी होने लगी। अब तक प्रफुल्ल ने अपनी दुकान का कोई नाम नहीं रखा था।

प्रफुल्ल के सभी ग्राहकों की मांग थी कि दुकान का कोई नाम रखा जाये। इसी वक़्त प्रफुल्ल ने अपनी दुकान को नाम दिया जिसे संक्षिप्त में कहते थे “MBA चाय वाला”। इसी तरह शुरुआत हुई ब्रांड “MBA चाय वाला” की। 15000 से शुरू हुआ धंधा आज 3 करोड़ का हो चुका है।

निष्कर्ष: इसी संघर्ष के साथ प्रफुल्ल ने ये सिद्ध कर दिया कि इंसान को किसी से प्रेरित होने की ज़रूरत नहीं है। वह खुद ही अपनी कहानी का निर्माता बन सकता है।

श्री प्रफुल्ल बिल्लोरे के जीवनवृत्त से प्रेरित

महिलाओं को आर्थिक आजादी की जरूरत



सुश्री मैथिली जे आर
सुपुत्री राखी पी ओ, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आज की तेजी से विकसित हो रही दुनिया में महिलाएँ बाधाओं को तोड़ रही हैं और ऐसे मुकाम हासिल कर रही हैं जैसा पहले कभी नहीं हुआ। आर्थिक स्वतंत्रता व्यक्तियों को दुरुपयोग से मुक्ति दिला सकती है। अभी तक, जब आर्थिक स्वतंत्रता की बात आती है, तो लिंग मायने रखता है। ऐतिहासिक अनुभव में सामाजिक कारकों के कारण, कई महिलाएँ आज भी आर्थिक रूप से अपने साझेदारों पर निर्भर रहती हैं, विशेष रूप से अपमानजनक संबंधों वाली महिलाएँ। वित्तीय असमानता महिला के साथ हो रहे अन्यायों का केंद्र है; वही वैवाहिक रिश्ते में उसकी भूमिका को तय करती है, उसकी स्वायत्तता को कम करती है।

वित्तीय असमानता के परिणामस्वरूप महिलाओं के लिए विकल्प कम हो जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप जीवन के दौर पर वे पिछड़ जाती हैं। उनके सशक्तिकरण में योगदान देने वाले प्रमुख घटकों में से एक वित्तीय स्वतंत्रता है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के ढेर सारे फायदे हैं जो सिर्फ आर्थिक स्वतंत्रता से कहीं आगे तक फैले हुए हैं। वित्तीय स्वतंत्रता महिलाओं को आर्थिक सीमाओं से बंधे बिना जीवन विकल्प चुनने की स्वतंत्रता प्रदान करती है। यह उन्हें वित्तीय सहायता के लिए किसी और पर निर्भर रहे बिना शिक्षा, कैरियर के अवसरों और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को आगे बढ़ाने के लिए सक्षम बनाती है। चाहे वह अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाना हो, व्यवसाय शुरू करना हो या पूरी दुनिया की सैर करने का हो, वित्तीय स्वतंत्रता महिलाओं को अपनी नियति को आकार देने की स्वायत्तता प्रदान करती है।

जब महिलाएँ आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती हैं, तो वे दूसरों के लिए आदर्श और प्रेरणा बन जाती हैं। विभिन्न क्षेत्रों और उद्योगों में फलते-फूलते हुए, वे रूढ़िवादिता को चुनौती देती हैं और इस धारणा को खारिज करती हैं कि कुछ कैरियर केवल पुरुषों के लिए हैं। इससे समाज को एक सशक्त संदेश मिल जाता है कि महिलाएँ अपने द्वारा चुने गए किसी भी क्षेत्र में महानता हासिल करने के लिए सक्षम हैं।

वित्तीय स्वतंत्रता के लिए योजना बनाने, निर्णय लेने और दृढ़ता की आवश्यकता होती है। जैसे-जैसे महिलाएँ चुनौतियों पर काबू पाती हैं और अपने वित्तीय लक्ष्य हासिल करती हैं, उनका आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान स्वाभाविक रूप से बढ़ जाते हैं। वे अपनी क्षमताओं और निर्णयों पर भरोसा करना सीखती हैं, एक सकारात्मक चक्र बनाती हैं जो वित्त से परे फैलता है और उनके जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है।

जीवन अप्रत्याशित है, और अप्रत्याशित परिस्थितियों से निपटने के लिए एक ठोस वित्तीय आधार होना आवश्यक है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिलाएँ आपात् स्थिति से निपटने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं, चाहे वह चिकित्सा संकट हो, नौकरी छूटना हो या कोई अन्य अप्रत्याशित परिस्थिति हो। यह तैयारी सुरक्षा और मन की शांति की भावना प्रदान करती है, जिससे महिलाओं को लचीलेपन के साथ चुनौतियों का सामना करने की हिम्मत मिलती है।

वित्तीय स्वतंत्रता, समान भागीदारी और और स्वस्थ संबंधों में योगदान देती है। जब दोनों साझेदार आर्थिक रूप से योगदान करते हैं, तो साझा जिम्मेदारी और आपसी सम्मान की भावना पैदा होती है। यह गतिशीलता पैसों के मामलों के बारे में खुले संचार को प्रोत्साहित करती है, जिससे मजबूत बंधन बनते हैं। इसके अतिरिक्त, वित्तीय स्वतंत्रता यह सुनिश्चित करती है कि महिलाएँ किसी साथी पर वित्तीय निर्भरता के कारण कभी भी अस्वस्थ रिश्तों में न फँसें।





प्रकाशक

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-III) का कार्यालय
केरल